যথকযন্নান



मनुक सन्तान

श्रीरामदेवझा

भारती-प्रकाशन-केन्द्र
दरभंगा

मनुक सन्तान

- सर्वाधिकार : लेखकायत्त
- संस्करण : १९६६
- प्रकाशक : भारती-प्रकाशन केन्द्र-दरभंगा
- मूल्य : १.७५ मात्र
- मुद्रक : नव भारत प्रेस, लहेरियासराय

कथा-क्रम

जनिक अनवरत सहानुभूति, प्रेरणा ओ सम्पोषणसँ

एहि लेखकक निर्माण भऽ सकल

ओहि समस्त सहृदय महानुभाव

लोकनिकेँ सादर

समर्पित

मनुक सन्तान

मनुक सन्तान

आसिन मासक भिनसरुक पहर बीतल जाइत छलैक। पीयर-पीयर रौद एकदम तिक्ख भेल जाइत छलैक। बाधक कारी-कारो रंग पीरी भरल रौदसँ कोनदन वर्णक लगैत छलैक। सौंसे चऽर मे भरि-भरि डांड़क चिचोढी सभ लहराइत छलैक। बीच-बीचमे कोनो-कोनो खेतमे पिरोंछ-लटुआयल धान दम तोड़ि रहल छल। एना बूझि पड़ैत छलैक जेना ओ धान सभ तलमला कऽ खसि पड़त··· बसातक आसपर चिचोढ़ी सभ डोलैत छल जेना साप सभक थोका बीन बाजासँ मुग्ध भऽ कऽ माथ डोलबैत हो। आ ओकरा बिहिया-बिहिया कऽ बूलि रहल छल छौंड़ा-छौंड़ीक हेंज।

कारी-झामर छौंड़ा-छौंड़ी सभक हेंज खेते-खेते बौआइत छल। सभक दृष्टि सतर्क छलैक डोका तकबामे। सभक दृष्टि एहन छलैक जेना पताल धरि छेदि कऽ चल जयतैक। तीन टा छौंड़ा भगबा

पहिरने, दू टा ओहिना नङटे—डाँड़मे डोरी मात्र। पाँच टा छौंड़ो—एकटा पन्द्रह सँ बेसीक नहि—वाँख तर छिट्टा लेने; देहमे आङी नहि, खुलो मसकल आँचरसँ झँपने…। एकटा आरो मौगी, पहिलकीक संगतुरिया जकाँ, प्रायः एक बच्चाक माय रहलि होइति।

ओकरा पहिलकी छौंड़ी टोकलकक—गे बिन्दा बहीन! तोहर बच्चाक ममरखा छुटलौ? ओकरा ममरखाक दबाइ आनि दहिन।'

—गे मुगिया! ओइमे पाइयो लगै छ ने? कतऽ सँ एतौ? देखौ छिहिन, मरदबा पूरब जोगबनी गेलौ, ओही ठिना बैठ रहलौ। ओना कऽ कहलिऐ जे परदेस जाइ छै तऽ जइते देरी चिट्ठी लिखतौ।' बिन्दा डाँड़ मोझ कऽ कपार परसँ लट झाड़ैत बाजलि—मरदक जातिये बड्ड इत्तर। लगमे रहतौ तऽ मिठ्ठा-मिठ्ठो बातमे मोन मोहने रहतौ आ…,

—गेहे, पहुना तोहर बड़ दिलदार छौ. कतौ काम-धाम करैत हेतौ, तनखाह भेटतौ तऽ पठाइए देतौ ने।'

—तनखाक बात नै कहै छियौ। रुपैया नै पठेतौ तऽ नै ने पठावौ मुदा हाल समाचार तऽ बुझैक चाही ने जे लोक-लड़िका कोना रहै छै।' बिन्दा मुगियाक बातक उत्तर दैत कहलकैक—गे सुगो! आइ तऽ तोरो मेहमानक अबैया छौ।'

सुगिया थोड़ेक लजा जकाँ गेलि। ओकरा भेलै—बिन्दा हमर मोनक भाव पकड़ि लेलक—सुगियाक आन्तरिक इच्छा रहैत छलैक जे कोनहुना ओकर बऽरक गप्प चलैक। ओ बाजलि—समाद एलो छल, कहि नै औतै को नै।'

दुनू नजरि उठा कऽ देखलक। गप्पे-सप्प करत-करैत दूर चल आइलि छलि। बिन्दा कहलकैक—गे सुगो! हम आइ आब बेसी डाँरा नै बिछबौ। मोन लागल अइ, घरपर बच्चा कोना हेतौ! भरि राति हकड़िते छै।'

बिन्दा आगाँ बढ़ि कऽ बान्हपर चलि गेलि आ सुगिया पाछाँ घूमि कऽ अपना हेंजमे चल आइलि।

—हे हे. के धान केँ धाङए......!!,

सुगिया एकटा डोका उठयबाक लेल निहुरिते छलि की बान्ह परसँ एकटा खेतवला खूब जोरसँ हाक देलकैक। जे जहिना छल से तहिना ठाढ़ भऽ गेल। सभ सशंक भऽ कऽ ताकऽ लागल। सुगिया अपन आँचरकेँ सम्हारलक। अपन छातीकेँ झाँपि कऽ टाहि मारनिहारकेँ देखैत बाजलि—आबऽ ने दहिन, कयौ ओकर किछु छति करै छै! बभना सभक खेतमे छै बाङो-बथुआ ने आ अनेरे भेँ भेँ करैत रहत...।'

मुदा स्वयं ओ एकेबेर दहसतिसँ भरि गेलि...बड़ी चंठा छ बभना! बेतुकारे गारी पढ़ि दै छै...!!

मनुक सन्तान

—गे ! बाहर भऽ जाही खेत सँ।' जिरिया छौंड़ी बाजलि जे सुगिया सँ कनेके छोट छलि आ जे साड़ी पहिरने छलि। ओकर आँचर बला भाग डाँडमे खोंसल छलैक। ओकरा देहमे आङी छलैक। ओ बेपोकाल डेराइत छलि मारिसँ। मुदा सुगिया डेराइ छलि नजरिक मारिसँ। जे कयौ ओकरा दिस तकैत छलैक तकर आँखि जेना ओकरा सौंसे देहमे गड़ि जाइत छलैक। औहि खेत-वलाक टाहिसँ चिन्हलकैक तखन अर्थ लगलैक जे बिन्दा किएक एना जल्दी चलि गेलि। सुगियाक मोनमे नाचि गेलैक एहि खेत-वलाक ओ नजरि जे बिन्दाकेँ देखौने छलैक; एकदम घिनौन ! मोनमे भेल छलैक जे ओकर सौंसे मुँह भम्होरि ली। तकरा बेसी दिन कहाँ भेल छलैक ?

मोनमे तामस भेलैक बिन्दापर जे हमरो किएक ने कहलक जे ई चंठा बभना अछौ छै !'

—जिरिया छौंड़ी ताँ अनेरे सभक जी हदराबौ छै। केओ की बाघ-सिंह छै जे गीड़ि जेतौ ? गारी देतौ ताँ कान मटिया कऽ सूनि लेबौ।' मुनेसरा बाजल छल। ओ जिरियासँ कनेके उनैस छल। ओकरा जिरियाक केओ बात सोहाइत नहि छलैक। ओकरा बेसी नीक लगैत छलैक फुलियाक बात। फुलियाकेँ जिरियासँ झगड़ा छलैक, किएक ताँ जिरियाक माय फुलियाक मायकेँ गारि पढ़ने छलैक आ मुनेसराक मायकेँ फुलियाक मायसँ बहिना लागल छलैक।

मुदा, ओहूसँ ऊपर ओकरा फुलिया बड्ड नीक लगैत छलैक। फुलिया कय दिन ने ओकर केश थकड़ि देने रहैक। केश थकड़ैत काल ओकरा कहैक जे—तोहर बाबड़ी सीटल रहै छौ तँ खूब बढ़िआ लगै छें तों।'

मुनेसराकेँ ओ गीतक पाँती नहि बिसरल जाइत छलैक—'बाबा हो मोर गौना करा दयह, पियाक सिटबौ बाबड़ी।'

एतबेमे खेतबला आबि कऽ आरिपर ठाढ़ भऽ गेलैक तँ जेना सभक प्राण अवग्रहमे पड़ि गेलैक। खेतवला एक बेर सभकेँ देखलकैक, फेर सुगियाकेँ देखलकैक। सुगियाक सौंसे देहमे काँट जकाँ गड़ऽ लगलैक। खेतवला सुगिये दिस तकैत बाजल—छौका बौछि के आ धान नहि धाङ्, ने तँ......

सुगिया पौरसँ कादोकेँ गोजियारैत रहलि।

खेतवलाक जाइते जेना सभ फक् दऽ निसास छोड़लक। जिरिया फुलिया, सुगिया सभकेँ बूझि पड़लैक जेना देहपर खसल एकटा पौघ धपना हटि गेल। जिरियाक देह एक बेर सिहरि उठल छलैक एहि दुआरेँ जे यैह खेतवला ओकरासँ एक दिन कय छिट्टा ने माटि उघबौने रहैक। फुलियाकेँ ओहिना मोन छलैक जे ओकरासँ कय दिन मड़ुआक बीया पटबौने रहैक। सुगियासँ कय बोझ मड़ुआक नाड़ कटबौन रहैक। आ जहिया कहियो ओकरा कहल काजमे देरी होइक की बेतुकारे गारि पढ़ि दैक। आ एहिना गामक आरो कतेक गोटे ने करैत रहैक।

मनुक सन्तान

मुनेसरा एतोकाल घरिक चुप्पीकेँ तोड़ैत बाजल—कते भेलौ गय फुलिया ?'

—एखन तँ अत्रो खोजिछा ने भेलै।' फुलियाकेँ खोजिछा नहि छलैक, खाली एकटा अन्दाज देखयबा लेल कहलकैक।

फुलियाक माथपर छिट्टा भरि केश। सौंसे देह-हाथमे थाल लेभड़ल। ओही हाथेँ केश कुड़ियबैत जिज्ञासा कयलकैक —आ तोरा कते भेलौ रे मूनो ?'

—हमर तँ धोकड़ीयो ने भरल।' ओ डाँड़ सोझ करैत बाजल —हमरा तँ भूख लागि गेल, एक खाड़ा मड़ुआक रोटी—सेहो टटायल-खा कऽ.........

—हमरा घरमे तँ डोका लऽ जेबो तँ भानस हेतौ।' फुलिया मुनेसराक बातक बीचमे बाजि देलकैक।

जिरिया एतबा कालसँ चुप छलि। ओहो गप्पमे योग दिअऽ चाहैत छलि। प्रतीक्षामे छलि जे क्यौ ओकरो टोकतैक। मुदा क्यौ पुछलकैक नहि, अनधैर्य होइत अपनहि बाजि उठल—हमरो घरमे तँ सैह हाल छै। आइ तँ डोको सभ ने भेटै छ। सभ पताल चल गेलै जानू।'

सुगिया बड़ी कालसँ चुप छलि। अपने धुनिमे मस्त रहय, की कोनो चिन्तामे ग्रस्त रहय। जेना कोनो तेसर लोकमे ओकर मोन बौआइत होइक। किन्तु एकरा लोकनिक उतरा-चौरीसँ

ध्यान भंग भऽ गेलैक। ओ जिरियाक गप्पक पछिला भाग सूनि कऽ बाजलि—गय! बूझऽ नै छी, खाइ तेताढ़ तँ खीरय पताल।'

—गय! मूगा रादो! ककरा तकैक लूरि नै हेतै तकरा भेटतै?, मुनेसराकेँ डोका बिछबाक कोनो विद्या अबैत होइक तहिना बाजल।

—एना तोँ ठोड़रा कऽ किए बजै छेँ मुनो? हमरा बजिते तोहर बोल एना रोड़ाह किए भऽ जाइ छौ?' जिरिया असहाय जकाँ बाजलि।

बात आयल आ गेल। ओकरा लोकनिक काज चलत रहलैक। गप्प चलैत रहलैक। क्रमहीन, प्रसंगहीन गप्प सभ एकक बाद एक अबैत गेलैक आ बीतैत गेलैक।

ओही क्रममे जिरिया पुछलकैक—गय सूगो दीदी! तोहर पहुना कखनो अबैतौ गय?'

—से पुछही गऽ ने पहुनासँ जे कखनी अबौतौ?'

—बात नै बुझो गय दीदी!' जिरिया बातकेँ रेघबैत उत्तर देलकैक—आइ तोँ ओही दुआरे तँ भिनसरे डोका बीछऽ अयलेँ। हम सभ बात बुझै छिऐ.....'जिरिया दाँत निपोड़ि कऽ हँसि देलकैक।

सुगिया जिरियाक गप्पपर बनौतरी तामस देखबैत कहलकैक—तोहर करेज देतौ बना कऽ ..?'

—करेजी तँ छागरक होइ छै निम्मन। एक दिन पजियार

हमरा बाबूकेँ कहैत रहे। ओकरा गहबरपर बहुत बलि पड़ै छै।' मुनेसरा दहीमे सही करैत बाजल। फे: जिरियाकेँ कच कचबैत कहलकैक—आ जिरियाक करेजीमेतँ खाली हाड़े-हाड़ छै ... कुट-कुट···कट-कट······।'

जिरिया मुनेसराक गप्पपर बड़ी जोरसँ बाजि उठलि—हे मुनेसरे! बेसी लब-लब नै करऽ, अपनाकेँ काबिल बुझै छथि!'

ताबतमे सभ हबर-हबर दोसरा खेत दिस बढ़ल। एक खेतकेँ पार कऽ दोसरा खेत जयबाक उपक्रममे सभ बहुत दूर आगाँ बढ़ि गेल छल। सभ अपना अपनी कऽ आगाँ जाय चाहैत छल जे पहिने जा कऽ बेसी बोछि लेब!

बहुत बेर उठि गेल छलैक। रौद बेसी भऽ गेल छलैक। ओहि कड़कड़ौआ रौदमे सभक देहक चमड़ी जेना झरकऽ लगलैक। देहमे लागल थाल खरकटि कऽ काटऽ लगलैक। सौंसे देह चुन-चुनाय लगलैक। सभ क्यो छिलमिला कऽ धूरपर पड़ाय लागल।

चऽल-चलन्ती बेरमे जिरियाक भाइ बिनुआँकेँ डबल पोठी हाथ लागि गेलैक। आ तँ खुपोसँ फानि उठल। एहन सन बूझि पड़लैक जेना मूल्यवान् मणि हाथ लागि गेलैक। पोठी माछक उज्जर चमकैत देहपर लाल रंगक धारी जेना सभक मोनमे समा गेलैक। ओहि झुंडमे जतबा गोटे छल सभक सस्पृह नजरि बिनुआँक हाथमे पुच्छी पटपटबैत पोठीपर लागल छलैक। जिरियाक मोन प्रसन्न भऽ उठल छलैक। अपन भाइक बहादुरी पर ओकरा गौरव भऽ रहल छलैक।

मुनेसरा ई बात सभ नहि बूझि सकल। ओकर ध्यान काँकोड़क माटिपर बैसल एकटा काँकोड़ पर छलैक। जँ एको रत्तो डोल-माल होइतैक तँ ओ तुरन्त बिलमे घुसिया जैतैक। आ जँ कुगऽमे पकड़ा जैतैक तँ लहर चुट्टावला टाङसँ आङुरे काटि दितैक आ सौंसे हाथ लिधुरे-लिधुरान भऽ जैतैक। मुनेसरा काँकोड़क ई सभ छक्का-पंजा बुझने छलैक। यथार्थमे मुनेसरा काँकोड़ पकड़बामे माहिर छल। से ओकर हेड़िया सभ सेहो मानैत छलैक। ओकरा समकेँ सेहन्तो होइत छलैक जे मुनेसरा जेना काँकोड़केँ चुट्ट दऽ पकड़ि लैत छैक से जँ हमरो सिखा दैत!

से मुनेसरा सहे-पहे हाथ बढ़ा कऽ काँकोड़केँ पकड़ि कऽ सकपंज कऽ देलकनि। काँकोड़ छलैक धरि जुआयल-बुढ़बा। काँकोड़ पकड़िने देरो ओ खुशीसँ चीत्कार कऽ उठल। एहि बेर बिनुआँ परसँ सभक ध्यान हटि कऽ मुनेसरापर चल गेलैक। मुनेसरोसँ बेसो, सय गुणा बेसी ध्यान ओकर दहिना हाथक आङुरक बीचमे जाँतल, विवश, जुआयल बुढ़बा काँकोड़पर। सभक दृष्टि सस्पृह, लुब्ध, लोलुप।

सभसँ अधिक लोलुप दृष्टि छलैक सुगियाक। मोने-मोन ओ जेना देवताकेँ गोहरबैत छलि जे हमरो जँ एकटा काँकोड़ भेटि जाइत। ओकरा मोन पड़लैक अपन पहुना, जकर अबैया छलैक आ जकरा

लेल आइ एतेक आवेश पूवक डोका बीछऽ आइलि छलि। आजुक डोका बिछबामे आन दिनुक अपेक्षा किछु विशेषता बूझि पड़ैत छलैक। रहि रहि कऽ ओकरा हृदयमे अनायसे आनन्दक हिलकोर उठैत छलैक। आजुक डोका बिछबामे आकरा विचित्र प्रकारक स्वादक अनुभूति भऽ रहल छलैक। जँ ओकरा पोठी, की गड़ै, की कांकोड़ भेटि जैतैक तँ जेना ओकरा लेल आनन्दक बाढ़ि आबि जैतैक। किन्तु आकर सेहन्ता सेहन्ते बनल रहि गेलैक।

मोनमे एक बेर इहो बात उठलैक जे बिनुआं आ मुनेसरासँ माङि ली। मुदा संकोचक मकड़जालामे ओझरा कऽ रहि गेलैक ओकर इच्छा। मोन पड़ि गेलैक पुनः अपन पहुना जकर अबैया छलैक। जकरा लेल ओ मायक एके बेर अढ़ौने डोका बीछऽ चलि आइलि छलि। आन दिन जँ ओकरा माय बाध दिस जयबा लेल उठबैत छलैक तँ सूतलसँ उठबाक मोन नहि करैत छलैक आ मुगिया अंघस-मंघस करैत रहैत छलैक। मुदा आइ ओकर माय जेँ को उठौलकैक की ओ फुरफुरा कऽ ऊठि गेलि आ एके बोलेँ डोका बीछऽ विदा भऽ गेलि।

बीचमे थोड़ेक दूर खोरि छलैक। छपर-छैआ छपर-छैआ पानि करऽ लगलैक। सभ छौंड़ा-छौंड़ी पानि हिलकोरैत, उड़बैत आगाँ बढ़ैत जाइत छल। बिनुआ पोठीकेँ अहलादसँ देखि मगन भऽ भऽ पढ़ि रहल छल—माछ भात, पाँच हाथ………।'

अनचोरमे ओकर हाथ ढोल भऽ गेलैक आ ओ पोठी चुभुकि दऽ पानिमे खसि पड़लैक। आ कर उज्जर चमकौ वला देहपर लालधारी चमकि उठलैक। बिनुआँ जाबत माँछकेँ घऽरऽ चाहलक ताबत ओ तरऽर चल गेलैक।

मुनेसरा जाबत बिनुआसँ जिज्ञासा करऽ चाहलवैक ताहिमे ओ अपन हाथक काँकोड़क संहे बिसरि गेल। काँकोड़क एकटा चूट्ट वला टाङ छुटि गेलैक। काँकोड़ ओकर कनगुरिया आङुर धऽ लेलकक। मुनेसरा बक दऽ काँकोड़केँ छोड़ि हाथ झाड़लक तँ काकोड़ चुभ दऽ पानिमे खसि पड़लैक। मुनेसरा धड़फड़ा कऽ ओहि ठामक पानिमे हथोड़िया देमऽ लागल। मुदा ओ कतहु पकड़इ! ओ सस्पृह आँखिसँ ओहि ठामक घोंकल पानिक हिलकोरकेँ देखऽ लागल।

फुलियाकेँ बिनुआँक माँछ खसलासँ एक रत्ती खुसिए भेल छलैक, मुदा मुनेसराक हाथक काँकोड़ खसैत देखि पीड़ा भऽ उठलैक।

जिरियाकेँ बिनुआ आ मुनेसरा दुनूक मनहूस चेहरा देखि दुख भेलैक। सुगियाक मोनमे पश्चात्ताप भऽ रहल छलैक जे हमही बिनुआंक माँछ आ मुनेसराक काँकोड़पर हिक गड़ा देने छलिऐक। जँ हम हिक नहि गड़बितिऐक तँ एकर सभक माँछ आ काँकोड़ पानिमे नहि जैतैक!

आन कय गोटेकेँ नीके जकाँ लगलैक। सभ बाहबा!...बाहबा!! कऽ उठल छल। मुनेसरा आ बिनुआँ ठकुआयल जकाँ ठाढ़ छल।

मनुक सन्तान

मुनेसरा ओहि चुप्पीकेँ तोड़ैत बाजल—गे दीदी ! एक बात कर ने ! हमरा डोकामेसँ आधा तों लऽ ले ·····।'

सहसा सुगियाक आँखि चंचल भऽ उठलैक। मान खुसीसँ भरि गेलैक। कृतज्ञ आँखि मुनेसरापर चल गेलैक। मुदा ई क्षण भरिक बिजुरिक चमकि छलैक। ओ कतेक काल मोनमे किछु सोचलक आ मूड़ी डोलबैत कहलैक—ऊँ हुँ ! तोहर माय आस-बाट तकैत होयतौ !'

—आस-बाट को तकत ? थोड़ेक मुनेसरा द छौ आ थोड़ेक हम दै छियौ।' ई कहि कऽ फुलिया अपन डोबाक पथिया धरतीपर झमोरि देलकैक।

एकटा छौंड़ा आ एकटा छौंड़ी मुनेसरा ओ फुलियाक गप्प सूनि कऽ पैर सहटारने बढ़ल जाइत छल। किन्तु जिरिया ठाढ़ छलि। ओ आश-बाट तकत छलि जे आब मुनेसरा कहत जे तोहूँ अपनामे सँ सुगियाकेँ दऽ दहिन।

बिनुआँ-जिरिया दुनू भाइ-बहीन मीलि कऽ बिछने छल, से ओकरा डोका बेस अहगरसँ छलैक। जिरिया मुनेसरासँ सूनऽ चाहैत छलि आदेश। जँ एकोबेर मुनेसरा उपकार कऽ टोकि दितैक तँ जिरियाकेँ बड़ सन्तोष होइतैक।

सुगिया एतीकाल सँ मूरत बनलि ठाढ़ छलि। ओकरा आँखिमे भरि खाजिक डाका, कानमे आ निघिन गारि आ मोनमे पहुनाक अबैया नचैत छलैक।

जिरियाक मोनमे रहि-रहि कऽ अबैत छलैक—मुनेसरा कते नीक लोक छ ! अपन बस्तु दै लेल तैयार भऽ गेलै आ गौरवाहो कम नहि !! एक बेर हमरा टोकबोने कयलक ! जेना हम लोके ने रही ! जेना वैह एकटा दानी पुरुख रहय !'

मुनेसरा अपन डोका गनबामे व्यस्त छल ओकरा बटबाक लेल। ओ जिरियाकेँ नहि टोकलकैक।

हारि-दारि कऽ जिरिया बाजलि—गे सुगिया दीदी ! तोँ कथीलय छुब्धिमे पड़लि छँ ? हमरा लगमे दू हिस्सा अछि, एक हिस्सा तोँ लऽ ले आ एक हिस्सा हमरा रहत।'

जिरियाक गप्प सूनि कऽ मुनेसराक ध्यान एवेओर टूटि गेलैक। ओ मूड़ी डलबैत बाजल—नै, एतामे जिरियाकेँ बड़ घटी हेतै। ई बौमोनो हमसभ नै करब।'

मुनेसराक ई गप्प जिरियाकेँ बड शीतल लगलैक। ओ मोनमे सोचलक—मुनेसरा गौरवाह नहि छै; ओकरा सोहपरसँ उतरि गेलै तेँ नै टोकलक जानू।' जिरियामे जेना नव उत्साह भरि गेलैक आ बाजलि—तँ सुगिये दीदीकेँ सुमझा दही, जाहिसँ ई लऽ लिअय।'

सुगिया सहानुभूतिक भारसँ दबलि जाइत छल।

मुनेसरा जिरियाक बातपर फेर माथा डोलबैत कहलकैक--नै, सेहो नै '

—इहो नै, ओहो नै, तँ सभक डोकाक मोटा बान्हि कऽ घऽ ले अपना कप्पार पर।'

जिरियाक एहि कृत्रिम तामसपर बिनु ध्यान देनहि मुनेसरा बाजल--सेहो बात नै ठीक। सभगोटे अपन-अपन डोका सभ एक ठाम फेंटि दहिन आ फेर जतेक गोटा छी से बराबरि कऽ लऽ ली।'

सभक जो हलसि गेलैक—ने ककरो टूट, ने ककरो नफा। सभ क्यौ अपन-अपन डोका उझीलि देलकै। ओहिठाम ढेरी लागि गेलैक डोकाक। मुनेसरा ओकरा सभकेँ फाँटऽ लागल।

जिरिया कहलकैक—हम आ बिनुआँ दूनू गोटा मिला कऽ एकेटा कूड़ी लेब।'

—नै, जतेक लोक ततेक कूड़ी। ओहीमे सुगिया दीदीकेँ सेहो भऽ जेतौ। बिनुआँ आ जिरियाकेँ सेहो अपन सुपत दू कूड़ी भऽ जेतौ।' मुनेसरा न्यायाधीश जकाँ बाजल।

मुनेसरा हबर-हबर कूड़ी लगाबऽ लागल। ओकरा लेल एखन फुलिया, जिरिया, सुगिया, बिनुआँ, ढुनुआँ, झुनिआ सभ बराबरि। ककरोमे काना अन्तर नहि छलैक। सभ एकरंग। सभ एके मनुक सन्तान।

• •

परती

•

पत्नी ताराक कोनो रुच्छ बात कानमे पड़ल छलैक।

राधामोहन अपन आङनसँ बाहर आबि कऽ ढहलहा देबालक ईंटक ढेरी लग ठाढ़ भऽ गेल। आगाँमे दू बीघामे पसरल निर्जीव सन परती छलैक। जंगल-झाड़सँ भरल, बन-तुलसी ओ मिरचैयाक गाछसभ चारू कात अपना मोनसँ चतरल।

राधामोहन एकबेर साँसे हातामे नजरि खिरौलक आ चारू कातक छहरदेवालीक भहरल आकार आ ओकर नोनी लागल ईंटसभ देखि पड़लैक। परतीक एहि कोनसँ ओहि कोन धरि ढहल देवालक दोग दऽ होइत एकपेड़िया ओम्हर बाध दिस चल गेल छलैक।

राधामोहनकेँ बड़ विचित्र लगलैक ओ परती। ओकरा मोन पड़लैक ओ जमाना जहिया एहि परतीमे पयर रखबाक साहस ककरो नहि होइत छलैक, जहिया नवकी कनियाँक पसाहनि जकाँ परती

सजल रहैत छलैक आ दू टा माली भिनसरसँ साँझ धरि एक-एक दूबिकेँ कतरि-कतरि कऽ परिआम बनबैत रहैक। राधामोहन गेन लऽ कऽ आहिमे गुड़कबैत छल, बड़ मोन लगैत छलैक।

बेसी काल ओकरा मोन लगैत छलैक अंगरेज हाकिमक छोटकी बेटी रोजीक संग गेन गुड़कयबामे। रोजीकेँ ओ तखन हाथ धऽ कऽ उठा दैत छलैक जखन रोजी धड़फड़ा कऽ खसि पड़ैत छलैक।

राधामोहन सोचऽ लागल अंगरेज साहेबक दुलरैतिन बेटी रोजीक सम्बन्धमे — आब कते टा भऽ गेलि होयत! ओकरा की ई परती मोन होयतैक?

राधामोहनकेँ मोन पड़लैक···कतेक बढ़ियाँ छलैक परती ओहि दिनमे! अंगरेज साहेब राधामोहनक पिता बड़ूबाबूक ओतऽ अबैत छलैक पोखरिमे माछक सिकार करऽ। सौंसे इलाकामे बड़ूबाबूक एक टा धाख छलनि। बड़ूबाबूक डरे खऽढ़ जरैत छलैक आ तेँ अंगरेज साहेब घोड़ापर चढ़ि कऽ एहि ठाम अबैत छलैक, आगाँमे रोजीकेँ बैसौने आ जीनक एक दिस उनटा कऽ राइफल लटकौने।

हँ, तँ ओ ई परतो देखि कऽ मुग्ध रहय।

राधामोहन बेसी काल रोजीक गहूमक पाकल सीस सन सोनहुल केश आ उजरो खिज्जा खोरा सन मुंह देखैत रहैत छल। रोजीकेँ एना देखबामे नीक लगैत छलैक। राधामोहनके आश्चर्य होइत छलैक जे ई साहेब आ रोजी एते गोर किएक छेक? अपना ओहि

ठाम तँ एहन लोक नहि होइत छैक ! से रोजीक हाथ, मुँह, ठोर, गाल छूबि कऽ देखबाक मोन करऽ लगैत छलैक। रोजी सन अपनो देहक रंग भऽ जयबाक इच्छा जकाँ भऽ जाइत छलैक।

राधामोहन क्षण भरि परतीक ओहि स्थान दिस ध्यानसँ देखलक जाहि ठाम ओ साहेब घोड़ाकें एक बेर ठाढ़ कयने छलैक। आइ अन यासे मोन पड़ि गेलैक ओ घटना—राधामोहन आ रोजी दुनू ठढ़ छल। बड़बाबू एकटा राजसी जीन बनवा साहेबकें देने छलथिन। सहीस घोड़ाक पीठपर कसि देलकैक।

रोजी आ राधामोहन ठुनकऽ लागल छलैक जे घोड़ापर चढ़ब। साहेब हँसैत-हंसैत दुनूकें उठा कऽ घोड़ाब पीठपर बैसा देलकैक। पहिने राधामोहनकें आ ओकरा आगाँमे रोजीकें।

थोड़ेक दूर हटि कऽ बड़बाबू चबुतरापर आराम कुर्सीपर बैसल छलाह। साहेब अपन राइफलमे गोली भरि देलकैक आ आकाश दिस नाल कऽ कऽ फायर कऽ देलकैक। बन्दूकक आवाज सूनि राधामोहन डेरा कऽ चिहुँकि गेल आ रोजीकें भरिपाँज कऽ धऽ लेने रहय। रोजीकें एकोरत्ती डर नहि भेलैक। ओ राधामोहनकें अपन देह धरैत देखि हँसि देने रहैक।

आ साहेब ओ रोजी जाय लागल छलैक तँ रोजी हाथ डोला कऽ कहने छलैक—राडामोन ! गुडबाइ !

घाड़ा चलि देने छलैक।

ई सभ बात काल्हुक घटना जकाँ बुझि पड़लैक राधामोहनकेँ। ओ एक बेर मायकेँ कसि कऽ झाड़लक जे ई बात सभ दूर चल जाय।

जखन बड़ू बबूक जमानाक सभ बात चल गेलैक तँ ई स्मृति रहि कऽ की? बड़ू बबूक जे इच्छा रहनि जे हमरे सन एकबाली राधामोहन होथि, से भेलनि नहि। राधामोहनक एकबाली होयबाँसँ पहिने सभ किछु ढहि गेल छलैक ने। ओ केवल ओहि खंडहरपर ठाढ़ भेल देखैत छल जे ओ टिल्हको सभ कहिया सरि भऽ जयतैक।

देवालक चारू कातक कलमबाग कटि कऽ जारनि भऽ गेलैक। जमीन आम रैयतिक भऽ गेलैक। अपन रहि गेलैक देवालसँ घेरल परती, खंडहरक ढेरीमे बेसरियाम भेल फूटल ईंट आ खपड़ाक ढेरी सभ। राधामोहन ओकरे ओगरबाही करैत छल, जेना कोनो सपँ सोनक तमघैलक ओगरबाही करैत हो। अपन छलैक बुढ़िया माय, नौमामे पढ़ैत बेटा, खौंझाहि पत्नी, आ कखनो-कखनो कऽ काज कऽ गेनिहारि नौड़िन राजदुआरी।

आसिनक रौद खूब उठि गेल छलैक। बड़ तीख लगैत छलैक। दूभिपरक ओस सुखा गेल छलैक। ईंटक ढेरीक ओहि कात मकइक ठठेर टलिआयल छलैक। एती कालधरि ताराक अस्तित्वकेँ एकदमसँ बिसरि देने छल मुदा ठठेरपर नजरि जाइते बूझि पड़लैक जे ओ बहुत रास रोजोक बीचमे रहियो कऽ ताराकेँ बिसारि नहि

सकैत अछि। ताराक संगे मोन पड़लौक जे ठठेरकेँ खोलि कऽ पसारि देबाक चाही, किएकतँ ओहू पसारबाक लेल आङनसँ आयल छल।

घरमे जारनि नहि छलौक। काल्हि साँझमे ठठेरे उठा कऽ लऽ गेल छल। भनसा घरमे भीजल ठठेरक बोझ पटकि कऽ बाहर चल आयल छल मुदा तारा बुते ओ पजरलौक नहि। चूल्हा फुकैत-फुकैत ओकर मुँह दुखा गेलौक। सौंसे घर धुआँसँ भरि गलैक आ ताराक आँखि लाले लाल भऽ कऽ कड़ुआय लागल छलौक।

राति खन खाइ लेल राधामोहन गेल छल तँ आगाँमे धुआइन-उसिझल, काँचे-कोचिल घेड़ाक तीमन आ मकइक रोटी पड़लौक। यदि तखन ओ थोड़बो तमसा गेल रहैत तँ मोनकेँ बड़ सन्तोष होइतौक। किन्तु से भेलौक नहि। तारा बड़ दयनीय भावसँ कहने छलौक—हे औ. आँच तँ ठोकसँ पजरबे ने कयल…।

राधामोहन हबर-हबर गोड़ि गेल छल। बलजोरी गिलासक पानि पिबैत बाजल छल—बच्चा खयलक ?

—नै सूति रहलौक।'

—माय ?

—माथ दुखाइ छनि ' पत्नी सहज भावेँ उत्तर देने छलैक।

—वहिकिरनियाँ ?' राधामोहन रोटीकेँ आङुरसँ नोंचैत बाजल।

—ओकरा ई अन्न-तीमन नीक लगतौक ? आबि कऽ काज धन्धा कऽ दैत अछि सैह बहुत बुझू।'

राधामोहनकेँ पत्नीक बोल सूनि कऽ बूझि पड़ल छलैक जे बहि-किरनी राजदुलारी नहि अछि, बहिकिरनी अछि हमर पत्नी तारा।

मकइक रोटी मुँहमे घबर-घबर लगैत छलैक। ओकरा घोटैत ओ दुनूमे तुलना करऽ लागल छल—रजदुलरियाक सोंटल पुष्ट बाँहि। पुष्ट छाती, भरल मुँह। आँखिमे मादकता, गतिमे अलमस्ती, बातमे नखरा आ दोसर दिस तखन आगाँमे बैसलि छलैक गोर-छरहर देहक पत्नी तारा। दुबर देह। मौलायल मुँह। सुस्त आँखि। दुखिताह बोल......।

सहसा आगाँ बिनु सोचने ओ रोटी-तरकारी फेर गीड़ऽ लागल छल।

रातुक सभ बात मोनमे उठैत रहलैक। राधामोहन आसिनक रौदकेँ देखऽ लागल। मकइक ठठेर पसारि देबाक छलैक। ओ सुरफुरा रहल छल जे जा कऽ पसारि दिऐक परन्तु ठाढ़े रहल। मोन पड़लैक जे राजदुलारी एखन खायक लऽ कऽ जयतैक। ओकर बाध जयबाक यैह बेर छलैक। ओ ठमकि गेल। कय दिनसँ रजदुलरियाकेँ नहि देखने छलैक। आब काज करबाक लेल कमे काल राधामोहनक आङन अबैत छलैक। काजो तँ बेसी नहि रहैत छलैक। थोड़-बहुत जे कुटिया पिसिया से तारा अपने हाथेँ कऽ लैत छलैक। तैयो बड़ बाबू जमिन्दारक हवेलीक ओ बहिकिरनी छलैक तेँ अबैत छलैक।

बेसी कालधरि राधामोहनकेँ बाट नहि ताकऽ पड़लौक। थोड़ेक हटि कऽ आगाँ दऽ कऽ एकपेड़िया धयने रजदुलरिया चल जाइत छलौक।

—राजदुलारी !' राधामोहन ओकरा सोर कयलकैक। ओकर बोल एकदम चिक्कन आ तन्नुक छलौक। जेना ओ एहि ठामसँ रोजीकेँ सोर कयने छलौक। राजदुलारीक नाम कहबाक भंगिमा तेहन छलौक जेना पत्नीकेँ सोर कयने हो। यद्यपि पत्नी ताराकेँ एहन कोमल स्वरमे नहि सोर कयने छलौक कहियो।

राधामोहनकेँ बूझि पड़लौक जे राज दुलारी रोजी नहि थिक, राजदुलारी पत्नी नहि थिक, ओ हबेलीक बहिकिरनी थिक। ओ बहिकिरनीकेँ सोर करैत अछि तेँ पहिल स्वरकेँ झपैत बाजल—गय रजदुलरिया !

—की कहै छी मालिक ?' रजदुलरियाक हाथमे पानि भरल डोल आ माथपर रोटीक गेठरी छलौक। घरवला लेल लऽ जाइत छलि। ओ राधामोहनक बोली सूनि कऽ पाछाँ मुँह घुमलि।

राधामोहन ओकर नकार-सिकार निहारैत रहल जेना ओकरा पीबि जाय चाहैत हो। रजदुलरियाक देहमे, छातीमे, बाँहिमे, गालपर, आँखमे राधामोहनक नजरि काँट जकाँ गड़ऽ लगलौक। ओ अपना देहकेँ साप जकाँ चकरिया लेबऽ चाहैत छलि।

ओ बाजलि—कथी लेल सोर केलिऐ ?

परती

राधामोहन चौंकि कऽ बाजल—कतऽ जाइ छैँ !'

—ओहि पार बाधमे 'ओ' हऽर जोतै छै। बड़ अपराहन भऽ गेलै। भूख लागल हेतै।'

राधामोहन राजदुलारीकेँ बच्चेसँ देखैत रहलैक। हवेलिएमे ओबेसी काल रहैत छलैक। आङनक छोट-छोट टहल टिकोरा कऽ दैत छलैक आ जहिया नवकी बहुआसिन मने राधामोहनक पत्नी, मने ताराक दुरागमन भेलैक तहियासँ ओकरा ताराक बहिकिरनी बना देल गेलैक।

आ राधामोहन मोनक आगाँमे कहियो कऽ तीन गोटेक पाँती ठाढ़ भऽ जाइत छलैक—रोजी, राजदुलारी आ तारा।

रोजी ओकरा सीमासँ बाहर चल गेल छलैक। तारा ओकरा सीमाक अन्तस्तलमे आबि कऽ अस्तित्व हीन भऽ गेल छलैक आ एही दुनूक बीच ठाढ़ रहैत छलैक राजदुलारी जकरा ने अपना परिधिमे समेटि सकैत छल आ ने ओकरा परिधिमे जा सकैत छल।

राधामोहन कहियो राजदुलारीकेँ बाकुटमे धरबाक चेष्टो कयलक तँ ओ पानिक चन्द्रमा जकाँ आङुरक गऽह बाटे बहि गेलैक। राधामोहनकेँ मोन छलै जे एकबेर राजदुलारीकेँ अनचोकेमे गट्टा पकड़ि लेने रहैक। बड़ु नीक लागल रहैक राजदुलारी ओतेक लगसँ। राजदुलारी किछु बाजलि नहि रहैक, छुट पटायलि नहि रहैक। हल्ला नहि कयने रहैक। केवल हँसि देने रहैक। कहि देने रहैक जे—बहुआसिन अबैत छथिन।'

आ राधामोहन बक दऽ छोड़ि देलकैक।

राधामोहनकेँ अनुभव भेल छलैक जे जाहि ताराकेँ ओ अस्तित्वहीन बुझैत छल तकर कतेक पैघ अस्तित्व छलै!

राजदुलारीक घरवला घरजमैया छलैक। अपन माय-बाप, सासु ससुरक परिवारसँ फराक दुनू बेकती कमाइत-खटाइत छल। बड़ बाबूक हवेलीक अधिकार ओकरापर किछु ने छलैक। ओ हवेली तँ अपने नितुआन भऽ गेल छलैक, पौनी-पसारीक पालन की करितैक!

मुदा हवेलीक अन्न-पानि जे युगोसँ खाइत रहलैक तकरो बड़ बाबूक मुइने कोना बिसरि जइतैक! से कखनो-कहियो जा कऽ काज धन्धा कऽ दैत छलैक। एकदमसँ अपने बहिकिरनी जकाँ।

जहियासँ राजदुलारीक साज एहि ठाम रहऽ लगलैक ताहि दिनसँ राधामोहन ओकरा उदास नहि देखने छलैक। सदिखन हिँहिँयाइत हसैत। आ तहियेसँ ओ हवेली अयनाइयो कम कऽ देने छलैक।

राधामोहनकेँ मोन पड़लैक अपन पत्नीक उदास-उदास मुँह। जहियासँ तारा एहि घरमे पयर देलकैक तहियासँ गोटेके दिन हँसैत-हुलसैत देखने छल होयतैक। तामस होइत छलैक तारापर जे दुःख-सुख तँ जिनगी भरि छैहे, तखन तारा एना बिएक भेलि रहैत अछि? ओहने किएक ने रहैत अछि जेना रोजो बढ़ि गेलापर होइत, को राजदुलारी अछि!

आगाँमे ठाढ़ि छलीक राजदुलारी। एही प्रतीक्षामे ठाढ़ि छलि जे गिरहथ किछु कहथिन।

राधामोहनक मोनमे एक बेर भेलैक जे रजदुलरियासँ पुछिऐक जे —डम्हक लताम सन चेहरा सेहन्तगर देह आ मलवोक। सन चेहरा किएक छौक आ तोहर बहुआसिन एना पिलपिलाहि, तमकाहि किएक छथुन?

रजदुलरियाक हाथमे पानि भरल डोल, माथपर खायक, सेहन्त-गर आकृति, हँस मुख चेहरा देखि कऽ स्पृहा भऽ गेलैक। आ कि स्पृहा तँ छलैके—इच्छा भऽ गेलैक, कामना भऽ गेलैक जे—एकरेसँ हमर बियाह होइत···एहो रूपमे ई हमरा जीवनमे रहैत···ई एहिना पनिपिआइ-खायक लऽ जाइत आ···आ हम ओकर हरबाह सांय रहितिऐक—खेतमे हऽर जोतैत···!'

······राधामोहन कल्पनामे अपनाकेँ हरबाह रूपमे पाबि एकदम चौंकि उठल। ऊँह, बड़ बाबू जमिन्दारक बेटा राधाबाबू हरबाह! बहिकिरनी रजदुलरियाक सांय···!

—गिरहथ की कहै छी, कथी लेल सोर कयलौं?' बड़ी काल-धरि ठाढ़ि रहि कऽ रजदुलरिया पुछलकैक।

—ओ···हँ···', राधा मोहनकेँ सहसा नहि फुरलैक जे की कहिऐक। ओ तँ ओहिना सोर कऽ लेने छलैक। ओ बाजल—आइ हाटपरसँ थोड़े सौदा-बारी अनबाक छौ।'

—आइ हाट कहाँ लगतौ ? परसू लगतौ ।' रजदुलरिया बाजलि ।

—तऽ, ई बात तँ सोहेपर ने छल ।' राधामोहनकेँ ई बात बूझल छलौक जे हाट आइ नहि, परसू लगतौक, तैयो बाजि देने छल । ओ बाजल—तोँ अबिहेँ ने आङन, बहुत रास काज छै ।'

रजदुलरिया 'बेस' कहि कऽ एकपेड़िया धयने चल जाइत रहलि । राधामोहनक मोनमे रजदुलरियाक हरबाह साँय आ बड़ू बाबू जमिन्दारक बेटा राधामोहनमे द्वन्द्व युद्ध होबऽ लगलौक ।··· राजदुलारी आ तारा जेना ई द्वन्द्व युद्ध देखऽ लागलि··· ।

राधामोहनकेँ मोनक ई ओझरौट बड़ भारी भऽ गेलौक । एहने ओझरौट कखनो-कखनो शतरंजोमे लागि जाइत छलौक । किन्तु शतरंजक ओझरौटमे रस अबैत छलौक आ जल्दी सोझराइयो जाइत छलौक मुदा एहि ओझरौटमे रस सुखायल छलौक ।

ओ दहिना कात थोडेक दूर आगाँ बढ़ि कऽ नारिकेरिक गाछ-तरमे गमछी ओछा कऽ बैसि रहल । राधामोहनकेँ काजमे काज स्नान करब छलौक—स्नानक बाद आङन जा कऽ किछु नहि कऽ सकैत छल । पत्नी ठाँओ पीढ़ी नहि कऽ दितौक, आगाँमे थारी नहि दितौक । जनैत छल जे जारनि नहि छलौक, भानस नहि भेल होयतौक । ओकरा मुँहमे रातुक धुआइन-उसिझल रोटी-तरकारीक स्वाद आबि गेलौक आ आँखिमे पत्नीक उपेक्षा भरल रूप उतरि गेलौक । फेर मोन पड़लौक घरवला लेय खायक लऽ जाइत राज-

परती

दुलारी···ओकर भरल पुरल सेहन्तगर देह, हँसैत-हिँ हिँयाइत मुँह। मोनक तहखानासँ बहार भऽ कऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक रोजी···एकदम लाल-गोराइक मुँह-देह, सोनहुल केश···। बूझि पड़लैक जेना रोजी सत्य घटना नहि भऽ कऽ एकटा फोटो मात्र हो। अतीतमे बीतल एकटा कथा।

राधामोहन विवशताक कठोर बन्धनक अनुभव कयलक। रोजीक स्मृतिक संगे भूतकालक समस्त ऐश्वर्यक स्मरण भऽ गेलैक। पचीस-तीस हजारक तहसील रोजीए जकाँ अतीत कथा भऽ गेलैक। पाछाँ विभिन्न मौजे सभ हाथसँ चल गेलैक। रैयतिसभ दखल कऽ लेलकैक। ओ मौजे सभ औखन छलैक मुदा ओहिसं राधामोहन किछु प्राप्त नहि कऽ पबैत छल, जेना राजदुलारीकेँ ओ नित्य देखैत छल किन्तु ओ ओकरा पकड़ि नहि सकैत छल।

आँटा पिसबाक मशीन खरीदि कऽ बैसौने छल मुदा चललैक नहि। घाटा लगलैक, पूजी डूबि गेलैक। रुइ धुनबाक मशीन लेलक, ओकरा चलौनिहार लोक नहि भेटलैक तेँ ओ पड़ले रहलैक। एहिना जीवन-रक्षाक लेल कतेक रोजगार आरम्भ कयलक आ सभ बैसि गेलैक। आ से सभ दू-चारि-दस बिगहा खेतकेँ चाटि गेलैक। आब राधामोहनकेँ अपन ड्योढ़ीसँ बाहर जे खेत रहि गेलैक ताहि-परसँ विश्वासे उठि गेलैक। ओकरा होइत छलैक जे ओ सभ जयबा लेल तत्पर अछि, जखन चल जाय। तेँ जे जमीन छलैको

तकरा प्रति राधामोहन मोह-हीन भऽ गेल छल। खाली आगांमे पड़ल दू बिगहाक परतीपर आस्था जमल जाइत छलैक।

राधामोहनके मोन पड़लैक—बेटा कहने छलैक स्कूलक फीस लय। तकरो कोनो इन्तजाम नहि भऽ सकल छलैक। एक बेर स्कूल विदा गेल फीस माफ कऽ देबाक लेल हेड मास्टरके कहबा लय किन्तु हेडमास्टर हँसि कऽ ओकरा कहलकक जे—राधा बाबू! अहूँ खूब हंसी करैत छी। अरे! स्कूल तँ अहाँ सभ पर भरोस रखने अछि जे उन्नति लय अहाँ किछु करबैक। इहो मकान तँ अहीँक बाबूजीक देल जमीनमे ठाढ़ अछि।'

राधामोहन ठहाका दऽ हसल छल आ हँसीमे बात उड़बैत कहने छलैक—हेडमास्टर साहेब! सेआइत हेडमास्टरीमे लोक अहांक लोहा मानैत अछि! आब बूझल जे कोना अहाँक पटु भाषणपर प्रसन्न भऽ कऽ बाबूजी स्कूलके ई जमीन देने होयथिन।'

राधामोहन फेर उनटि कऽ स्कूल दिस नहि गेल। लाज आ संकोच दुनू जकड़ि लेलकैक। आ एहिना घरक चीज वस्तु वा गाछ-बाँस वा खेत बेचि-बेचि कऽ खर्च चलबैत रहल अछि। जहिना जमीन-जथा छोड़ि-छोड़ि कऽ चल गेलैक तहिना दरबारी-मोसाहब, सिपाही-पटबारी, गबैया-पहलमान, नोकर-खवास, जन-बोनिहार सभ छोड़ि-छोड़ि कऽ चल गेलैक। सभक तँ ओ पालने ने कऽ

परती

सकत छलैक—परिवारमे बचि गेलैक माय, पत्नी, बेटा आ अपने। धन-बीतमे ई ड्यौढ़ी, ईंट-खापट आ दू बीघा परती··· ।

राधा मोहनक मोन बौआइत-बौआइत एहि परती आ पत्नी तारा छोड़ि कऽ जा नहि सकैत छलैक। ओकरा चारू कात घेरावा जे पड़ल छलैक। तहिना ई परती चारू कातक देबालसँ घेरल सुरक्षित बूझि पड़लैक जकरा भीतर ककरो अनकर अधिकार नहि भऽ सकैत छलैक।

बड़ी काल बैसल-बैसल भऽ गेलैक ओकरा। उठऽ-उठऽ पर छल कि कोनो विचार मोनमे अयलैक। ओ बैसि गेल। सोचऽ लागल जे खेत-पथारमे बैसि कऽ खेती करयबामे संकोचक ततेक पैघ बान्ह अछि जकरा पार करब असंभव भऽ जाइत अछि। मुदा ई परती तँ चारू कातसँ घेरल अछि—एकरा तँ अपनोसँ ताम-कोड़ कऽ-कऽ उपजा सकैत छी। धरती तँ बाँझ नहि होइत छैक···ओ त आवेश मङैत छैक। जे जतेक आवेश देतैक तकरा ततेक ओकर मात्सर्य भेटतैक।

राधा मोहन कल्पनामे डूबि गेल···ओ अपनेसँ खेत तामि रहल अछि··जोतल कोड़ल खेतमे बदलैत-बदलैत ओकरा हाथक पहिल फोका सभ फूटि कऽ ओकरा स्थानपर फेर नव फोका सभ भऽ गेलैक। ···सौंसे जोता कऽ रङो-रङ भऽ गेलैक। ···सौंसे खेतमे कोबी-आलू रोपि देलक आ अपनेसँ पेखरिसँ घैले-घैले पानि आनि कऽ पटबैत रहल···सौंसे परती लहलहाइत धरतीमे बदलि गेलैक···।

सहसा राधामोहन चौंकि उठल। ओकर ध्यान टूटि गेलैक। पाछाँसँ कयो ओकर देह डोला देलकैक। ओ पाछाँ मुड़ि कऽ देखलक तँ तारा आकर कान्ह डोलबैत ठाढ़ि।

—अहाँ एतऽ चल अयलहुँ?

—आहि रे बा! की करितहुँ? दू बाजि रहल छैक सेहो किछू ध्यान अछि? एखनधरि स्नानो ने कयलहुँ अछि।' तारा बाजलि।

राधामोहन शून्य दृष्टिसँ तारा दिस ताकऽ लागल।

कड़कड़ौआ रौद। कतहु कयो ने छलैक। निस्तब्ध जकाँ छलैक वातावरण। तारा राधामोहनक केशपर पड़ल कोनो खऽढ़-पातकेँ हाथसँ झाड़ि कऽ ओकरा पोछैत बाजलि—अहाँ एना रूसि किएक रहैत छी? हमर कोन दोख रहैत अछि? हम तँ किछु ने करैत छी?'

—हम रूसल कहाँ छी?' राधामोहन विहुसैत बाजल।

—उहुँ, अनेरे दू बाजि गेल ने!' तारा राधामोहनक हाथ पकड़ि कऽ उठबैत कहलकैक।

—आङन जा कऽ की करू?'

—स्नान-भोजन आर की?'

—जारनि तँ छल नहि, भानसो तँ ने भेल हेयत।' राधा-मोहन बाजल।

परतो

तारा राधा मोहनक गप्पक उत्तर देत कहलकैक—एहिना चुपचाप आबि कऽ बैसि रही··· ! ··· किछु-किछु लऽ कऽ मानस कऽ लेलिऐक। चलू आब। लटारम्ह छोड़ू।'

राधा मोहन जेना स्नेहक वर्षामे नहा गेल। बूझि पड़लैक—ई परतो हमर अपन थिक, एकदम अपन। फेर अनुभव कयलक जेना रोजी को राजदुलारी एकटा छलना थिक, मृगमरीचिका। ओ अपन नहि थिक— अपन थिक ग्रोह तारा—एक मात्र अपन। ई चिर सत्य थिक, समस्त जीवनक सत्य। राधामोहन ध्यानसँ तारा दिस तकलक तँ बूझि पड़लैक जेना ओ रोजी आ राजदुलारीसँ बेसी सुन्नरि अछि—बेसी मधुर अछि। बेसी मादक अछि, मन-मोहक अछि प्राणक पोर पोरमे समायलि अछि।'

—एना किएक देखऽ लगलहुँ औ ?' तारा राधामोहनक भाव-भंगिमा देख कऽ बाजलि।

—अहिना। देखऽ लगलहु जे···।'

—चलू, लोक की कहत ?'

—कहत को।'

राधामोहन पोखरिक घाटपर चल गेल औ तारा आङन।

नकली आदमी

कमल जखन चुमाओनक लेल पोढ़ीपर बैसल तँ एकै बेर कोनो अभावक पूर्त्तिक लेल आङनमे हडबिड़रो मचि गेलैक—कनिञा के बनतै ?

बिआह की दुरागमनक लेल प्रस्थान करबाक काल चुमाओन होइत छैक आ ताहि काल एकटा नकली कनिञा बना कऽ दहिना भागमे बैसा देल जाइत छैक। बस, कोनो छौंड़ाकेँ जे भाइ होइक ओकरे पकड़ि कऽ घोघमोघ तानि दैत छैक, भऽ गेलैक कनिञाक विधि। से विधि कोना पूरा होयत, ई समस्या ठाढ़ भऽ गेल आङनमे।

सौंसे आङन रंग-बिरंगक 'डालिया' फूल सन परिधानमे गामक बेटी, टोल-पड़ोसक पुतहु, सभ बज-बज करैत। एक गोटेक नजरि टुनटुनजीपर गेलैक, टेनिस जुत्ता, नील-रंगक पेताबा, नील रंगक हाफ-पैंट, हरियर रंगक रेशमी बुश्शर्ट आ गरदनिमे स्काउटिंग

रुमाल बान्हल। राजदुलारी डेन पकड़ैत कहलकैक—बच्चा चल तँ, एकटा काज कर तँ।'

टुनटुनजी ओकर मुँह ताकऽ लागल। भीड़मे मूड़ी घुसिआ कऽ ओकर महाकाली दीदी चुमाओन देखैत छलैक। मुदा टुनटुनजी ओकर आङुर पकड़ने छल। राजदुलारीक बात सूनि ओ आरो जोरसँ पकड़ि लेलक।

राजदुलारी ओकरा घोचैत कहलकैक—चल ने बाउ...'

—कत्तऽ चलऽ कहैत छिहिन ?' महाकाली भीड़सँ पाछाँ हटैत बाजलि। टुनटुनजीक संग ओकरो हाथ झमोड़ा गेल छलैक। राजदुलारी पाछाँ घुमैत ओकरा दिस ताकि कहलकैक—कनी कनिजा बनि देतइ ?

—जो जो—महाकाली चमकि उठलि—तोरा लेखेँ सभ सऽ गेल गुजरल गे.....?' महाकाली डँटैत कहलकैक।

राजदुलारी हतप्रभ भऽ गेलि—गे ! तँ, कोन बड़का अपराध भऽ गेलइ....?' तावत ओमहरसँ सुदामा सोर पाड़लकैक—गे अङरेजो, छोड़ि दहिन, येह मुखो भेटि गेलइ।'

सुदामा मुखोकेँ पकड़ने जाइत छलि। ओकर बाँहि धयने। मुखो.....बिलटल सन एकटा छौंड़ा, मैल-चिकाइट सन भगबा पहिरने... खालो देह...—गरदनि लगक हड्डी जागल.....गरदनि आ हड्डीक बीचमे कारी-कारी रोटी भरि मैल...कानक जड़िमे

तहिना कारी मैल जमल···कानक उपरका भागमे पितड़िया कनौसीकें ओकर माथक झबरलहा केस छाड़ने·····माथक पछिला भागमे ओझरायल भुल्ल आ ठुठ्ठ टीक फहराइत। छातीक सातो हड्डो ओहिना चक-चक करैत·····पेट कनी ऊँच आ ओहिमे नील रगक धारीदार शिराक रेखा·····ढोंढ़ी उनटल·····

कमलक दहिना कात पीढ़ोक निच्चाँमे चुक्कीमाली भेल बैसल ऊपरसँ कमलक रेसमी चद्दरि तनने मुखो तरे आँखिजे अरिपनक रेखा आ ओहिपर पड़ल सिन्दूरक ठोपकें गनि रहल छल। गरमीसँ मोन आउल-बाउल भेल जाइत छलैक। घामे तर-बतर भेल शरीर भीजल चल जाइत छलैक। आ ताहिपरसँ कयौ घोघ हटा कऽ गरम-गरम तरहत्थी ओकरा बाप गाल पर सटा देलकैक। मोन गरमेँ खोंझायल छलैक आ ताहिपरसँ ओ ठेला पड़ल हाथ बूझि पड़लैक जेना सौसे गाल नछोड़ि लेलकैक। तरसँ देखलक, कोनो लहठीवाली मौगी अपन हाथ अहिबातक पातिल महक दोपमे सेदि रहल छल। ओकरा भेलैक जे एक लात लगादी ओहि पातिलमे जे ओ ढनमना कऽ फूटि जाय। मुदा ओकरा लात नहि चलबऽ पड़लैक। ओमहर कयौ नव देखनिहारि धक्का दऽ कऽ आगाँ बढ़ि कऽ देखऽ चाहलक। ताही धक्कामे पड़ि बूढ़ी तलमला गेलीह··· खसऽ लगलीह। कोनो दोसर कनिआ हुनका हटा देलकनि। बूढ़िक हाथसँ मुखोक मुँह परक कपड़ा खसि पड़लैक तें मुखो

नहि देखि सकल जे की भेलैक। ओकर भोन आब पड़ा जयबाक लेल छटपटाइत छलैक। फेर ओकरा गालपर धीपल हाथ सट दऽ बैसि गेलैक। ओ चिहुकि उठल मुदा एहि बेरुक हाथ बड़ कुम्मल छलैक-गोर-नार, काचक चूड़ी। मुखोकेँ बूझि पड़लैक जेना नछोड़ पर मलहम पड़ि गेल हो। फेर दहिना आ बामा गाल पर एहिना गरम-गरम स्पर्श भेलैक। नीक लगलैक।

तावत क्यौ बाजल—ए कमल माय! गूड़ दिअउ ने मूहमे। आइ कनिआक मूँह मधुर कऽ दिअउ तँ पुतहु मधुर होयत, पियरगरि···।'

—हँ हँ, यैह तँ रखने छिअइ···' कमल माय जबाब देलथिन आ मुखोक सौंसे मुँहमे करिछौन रंगक पलड़लहा गूड़ लेभड़ि गेलैक···लस···फस···मोन भिनभिना गेलैक। फेर आङुरसँ छूबि कऽ देखलक··गूड़ लागल। ओकर आँखि चमकिसँ भरि गेलैक। ओ जीहसँ ओकरा चाटऽ लागल। बड़ मधुर लगैत छलैक। ओकरा आब एहि घोघतरक उमस केर दुख नहि छलैक। ओ जीह लऽ कऽ मूँहक चारू कातक भागकेँ चटैत रहल। जीह नमरा-नमरा कऽ चटैत रहल···रातिमे नगहर भरबा काल धरि चटैत रहल।

चारू कात सघन अन्धकार। ऊपर आकाशमे तरेगन चकमक करैत छलैक। मुखो सभ दिनसँ जनैत छल जे पोखरि-घाट पर जँ दस टा मौगी गीत गबैत पहुँचि जाय तँ ओहिठाम किछु ने किछु

अवश्य बाँटल जाइत छैक। सभसँ बेसी गूड़-चाउर…गूड़ आ… आ अरबा चाउर…नगहर भरइमे पहिने पाँच टा अइहबकेँ पाँच-पाँच मुट्ठी आ तखन सभकेँ एक-एक मुट्ठी बाँटल जाइत छैक…मुखो कमलक आङनसँ निकलल, ओहि मौगीक झुंडक पाछाँ ससरल चल आयल।

दूटा अहिबातो…खोजिछमे तीन-तीन पाओ मेंहिका अरबा चाउर, दूभि आ एक-एक टा रुपैया …दुनूक हाथमे नव डाबा… पानि भरत…माथ पर लेत, पीअर साड़ीसँ झाँपि देतैक आ फेर विदा भऽ जायति…पानि भरनिहारि बाजत नहि…मौन चल जाइत रहत गीतक स्वर-ताल पर…।

खड़हीमे लपेटल रुइ…पाँचटा बत्ती भिनसरेसँ घीमे डूबल छलैक। सुदामा ओहिमे सलाइ धरा लेलकैक…एक बेर लहास फेकलकैक आ फेर बीत-बीत भरिक पनारि…पीअर-पीअर दीप-शिखा सभसँ ग्रामदेवता बाबाक बाट जगमगा उठल। पानिक हिलकोर पर पड़ैत प्रकाश पुंज काँपि रहल छल। दुनू कनिञा-एक कमलक भौजी आ दोसर…दोसर कनिञाक घोघ बेसी तानल छलैक…पानिमे पैसलि…एक बेर कमलक भौजी किलकिला कऽ हँसलि आ फेर ठेहुन धरि अपन साड़ी समेटि लेलक। पानिमे आगाँ बढ़ि गेलि, बढ़िते जा रहल छलि आ की पाछाँसँ हैया-दैयावला स्वर सभकेँ स्तब्ध कऽ देलकैक।

—आहि रे विध ! पानि कटबे ने केलकइ क्यौ ' समकेँ धक दऽ मोन पड़ि गेलैक—जो बजा लबहिन··· ' सुदामाक मोन असकता गेलैक, के एतेक दूर जाय—आबय··· ।

सुदामा बाजलि पार्वतीसँ—गे गङाजली ! ककरो बजा लबहिन दलान परसँ ।' फेर जेना मोन पड़लैक, राजदुलारीकेँ कहलकैक—गे अङरेजी ! मुखो संग-संग अबौ छलौ । देखहिन ने कोमहर छै ? ओकरेसँ पानि कटबा ने दहिन ।'

—तऽ गे. अबैत तँ देखने छलऐ ।' पार्वती हरान होयबासँ बाँचि गेलि । आगाँ बढ़लि तँ सुनसोन महादेव मन्दिरक ओसारा पर पायाक अऽढ़मे बैसल मुखा···ओह मुखो · दिनमे कनिआ बनल छल·· मूहमे गूड़ पड़ल छलैक—कमलक कनिआक देओर···तेँ एखन पानि कटितैक । कमलकेँ छोट भाइ नहि छलैक···आरो क्यौ छौंड़ा छलैक नहि··· सभ अपना-अपना दलानपर लालटेमक इजोतमे पढ़ि रहल छल । क्यौ पढ़ाइ हर्ज किएक करैत ? ··· मुखो टा छल ओहिठाम, समस्या सोझरा गेलैक ।

—चक्कू दहिन हाथमे ।'

—नञि छइ, घरे पर बिसरि गेलइ ।'

—तऽ क्यौ हँसुली दऽ ने दउ, मारिकहूँ महजरो करइ जाइ छथि · ' हँसुली ककरो गरदनिमे नहि छलैक, सभक गरदनिमे असरफीक छऽड़, सोनक चेन आ रोल्डगोल्डक मोहरमाला—नबकी

कनिञा सभ की हँसुली पहिरइ छइ, के गरदनिमे सेर भरि रूपाक घेघ लटकौने रहओ···ऊँहुँ···कमल मायक गरदनिमे सोनक हँसुली छलनि।

—ऐह ले हँसुली···' कमलक माय अपना गरदनिसँ निकालि कऽ देलथिन सुदामाकेँ। मुखो निर्विकार भावेँ सुदामाक हाथसँ हँसुली लऽ लेलक···ठोस सोनक हँसुली। मुखो हाथमे राखि कऽ जेना आस देमऽ लगलैक। प्रकाशमे हँसुली चमकि उठल, तृतीयाक चन्द्र जकाँ। मुखो हँसुलीकेँ देखैत रहल सुदामा टोकि देलकैक आ मुखो काठपर बैसि कऽ तीन बेरि पानि काटि देलकैक, सौंसे घाटमे हिलकोर गोल-गोल वृत्त बना कऽ पसरि गेलैक। आ ओकरा अन्तरमे एके बेर भरा-भरा गेलैक···उज्जर-उज्जर चाउर···गूड़··· गूड़क पसिझल ढेप आ ढेपक चारूकातसँ सटल चाउर···।

मुदा गूड़-चाउरक प्रथा ऊठि गेलैक से तँ मुखोकेँ बुझले ने छलैक···प्रथाक उठाब आ चलनि तँ बड़के घरसँ होइत छैक, यदि सुरजाक बिआह, की सोनमाक दुरागमनमे उठाब भेल रहितैक तँ सौंसे गामक मौगी खिस्सा करितैक, बौन फिरा दितैक। ओकरा सभक की हस्ती जे ककरो मुँहमे झोंक दऽ सकय। मुदा कमल-मायकेँ से सभ किछु नहि भेलनि। लोक प्रशंसे कयलकनि जे भने ई झंझटि हटि गेलैक। मुखो लुलुअयले रहि गेल।

घाटपरसँ आबि मुखो मोखलग बैसल सोचि रहल छल, आगाँ

घरमे घी टहकैत छलैक... अइहबक फऽड़ पकैत छलैक, दुआरिपर खबसिनिआ गहूमक चिक्कस सनैत छलि, पलरलहा गूड़ जल्दी कागतसँ छुटिते ने छलैक—ए, मलिकीनी ! ई कागत तऽ छुटबे ने करइ छइ।'

—सानि ने दहिन कागत सहीते, कोनो धयल रहतइ ?' घरसँ कमल-माय कहलथिन।

ओमहर पुतहु दोसर अढ़िआमे मसल्ला दऽ खस्ता बना रहल छलनि। घी पुष्ट कऽ छलैक से हाथ छह-छह करैत छलैक। अपना देयादमे, सम्बन्धीक ओतऽ आ कनिआक नैहर बैन देबा लेल घीमे अइहबक फऽड़ बनितैक। कमलमाय कहलथिन—कनेक आरो सानि दिऔ जे खाइमे हल्लुक रहतइ आ फेर खबसिनिआकेँ कहलथिन—गे मेलउ नजि तोरा... पानि छन-छन जरल जाइए।' पानि माने तेल... पकमान पकबैत काल तेलक नाम लेने बेसी तेल जरैत छैक।

दोसर कात चूल्हिपर लोहिआमे बजारक खाँटी मिलही तेल चढ़ल छलैक। बनिआ अपना घर पर आधा तीसीक तेल फेंटि कऽ दू नम्बर कहि कऽ देने छलैक, से मद्धिम आँच लगैत छलैक। खबसिनिआ अइहबक फऽड़ बना-बना कऽ ढेरिऔने चल जाइत छलि

मुखो सब किछु देखि रहल छल मुदा निर्विकार भावेँ नहि।

सुदामा बौन बाँटि कऽ गेल छलि। मुखोकेँ देखि गुड़ही पूड़ीपर गुड़ही खीर चढ़ा कऽ देलकैक आ ओ हबर-हबर खा गेल। मुदा ओकर मोन लागल छलैक उजरा तसमइ पर··· थारिए-थारी आङने-आङन गेलइ।··· गूड़क खीर तँ गाममे बाँटइ लय आ पौनी-पमारी लय बनल छलैक। मुखोक दिमागमे कहिआ-कतऽक खीरक स्वाद रहि रहि मोन पड़ैत छलैक। ···एक बाटी खीर··· कमल एक कौर मुहमे लगा कऽ बाटीमे राखि देलकैक आ कमलक माय बाटी मुखोक आगाँमे घुसका देलथिन खाइ लय···एहू बेर आसमे छल··· ओहि बेर तँ कमलक मुँहमे पपिआहा भेल रहैक तँ कमलक मायके क्यौ ई टोटमा देखा देने रहनि। सब बेरुक व्यवहार एके रंग तं नहि ने रहैत छैक! किन्तु मुखो भिन्न अवसरक भिन्न व्यवहार सँ सर्वथा अनभिज्ञ छल।

मुखोक कंठ लग आबि कऽ कोनो मधुर स्वाद पुनः पेट दिस फोरि जाइत छलैक। कमलक माय कहलथिन—गे सुदामा, देखहिन, बिलहइ वला अइहबक फऽड़ बनलइ की नञि?' आ छन्न दऽ लोहियाक टहकैत घीमे खस्तावला अइहबक फऽड़ धऽ देलथिन। मुखोक नाकमे सोन्ह सुगन्धि भरि गेलैक, मुग्ध भऽ बड़ा जोरसँ ओ साँस घिचलक, जेना भरिपेट पीबि जाय चाहैत हो ओ घिबही सोन्हगर सुगन्धि। सुदामा कोनमे सोहारी बेलइ लय बौसि गेल छलि। ओ मायक बात सूनि उठलि बाहर चङेरामे बना कऽ

राखल अइहबक फऽड़ लेबाक लेल। मोख लग आबि धड़फड़ा कऽ खसलि—इह, के छी ···?' फेर लग जाय देखलकैक—के छी, मुखबा रे! आब की छिअउ? जो ने रे···खेलें तँ खीर-पूड़ा। ···जो ··उठ ··कोढ़िया···जनपिट्टा नहितन···।'

कमलक माय उकछल स्वरें कहलथिन—हँ, बैलाबऽ एकरा। सदिखन डाँउ-डांउ करैत रहइए, लोकक कौर गनैत थारी पर नजरि गड़ा कऽ हक्क लगौने रहइए। एकरा सभक आगाँ खाइ तऽ अन्न पेटमे ठाढ़े रहय ।'

सुदामा ओकर डेन पकड़ि घिचने अयलैक आ दुरुक्खा लग आबि कऽ बाहर ठेलि देलकैक। फटाक दऽ ओ बड़का सखुआक केबाड़ लागि गेलैक ··खट दऽ बिलैया बैसि गेलैक···आ शान्त···।

मुखोक दिमाग एकेबेर घुड़मुड़िआ खा कऽ पटका गेलैक। मुखो ठाढ़ छल। छाबामे मच्छड़ कटलकैक तँ ओकर हाथ अनायासे सटाक दऽ बजरि ओहिठामक चमड़ी नोचऽ लगलैक, आ मुखोक पौर बिदा भऽ गेलैक···अन्धकार ··बिशाल अन्धकार···जेना मुखोक आँखिक अन्धकार पसरि कऽ सौंसे विश्वमे व्याप्त भऽ गेलैक···ऊपर अनन्त आकाश अनन्त दूरी धरि तरेगनक विस्तार···मुखोबे ठेस लगलैक···ओ सम्हरि कऽ चलऽ लागल ।

तेबट्टी पर ··पुबारी कात पोखरिक कोन, कनेक दूर हटि कऽ ग्राम-देवता बाबाक पीपर·· पीपर तरमे एखनो एकटा बाती लुकभुक जरैत छलैक ··मुखो तेबट्टी परसँ ·· दच्छिन मुँह होयत···

छोटकी छपकुइआ घर…फट्टक लागल… कुट्टी-कुट्टी भेल खिनहरिपर गुदड़ी भेल केन्था तरमे ओकर मायक ठठ्ठर…मुखोकें पुछतौक—मुखो ! खेलें ?' मुखो रेघाइत शब्दमे 'हँऽऽ' 'नऽहि' क बीचमे जवाब देतौक…हँ अँ अँ अँ अँ…मायक मोनमे जिज्ञासा उठतौक—हमरो लय किछु अनलक की नञि ?…केन्थासँ मुँह बहार कऽ अन्धकारमे देखबाक निष्फल चेष्टा करतौक आ फेर…निराश भऽ मुँह झाँपि लेतौक… ।

मुखो ठाढ़ भऽ ओहि मिझाइत दीपक बातीकें देखिते रहल । ओ प्रतीक्षा करऽ लागल जे कखन ई बाती मिझा जायत आ ओकर ज्योतिक परिधिकें अन्धकार दाबि देतौक…आ फेर अनहार घुप्प भऽ जयतौक… ।

पीपरक पात हवाक छोट झोंकसँ सिहरि उठल आ कोनो चिड़इ एकबेर अपन पाँखि फड़फड़बैत उड़ि गेल…ओकर पाँखिक अवाज…साँ…सूँ…साँ…सूँ…साँ…सूँ…मे मुखोकें बूझि पड़लौक जेना कहैत होइक…मु…खो…मु…खो…मुखो…मुखो…मुखो… । ओकरा बूझि पड़लौक जेना मुखो मनुक्खक नाम नहि कोनो जन्तुक नाम होइक, कोनो जन्तुक… । ओ जन्तु जेना अपना समाजमे मीलि जयबाक लेल बजा रहल होइक । सत्ते, जँ मुखो मनुक्खक बदलामे कोनो जन्तु-जानबर रहैत तँ नितान्त सुखी रहैत, स्वतन्त्र रहैत । मुदा से नहि, मुखो आदमी अछि, आदमी—नकली आदमी ।

परमिलिया

साँझ पड़ल जाइत छलैक आ पीसब खतमे ने भेल छलैक। परमिलिया-मायक मोन आँट जकाँ भऽ गेलैक। ओ अकछाइलि सन ठेसलि पीसि रहलि छलि। साँझ पड़ि जयतैक से सोचिते मात्र ओ आर गसिया कऽ जाँतक हाथरकेँ पकड़ि लेकक। बाँहिमे गति देलकैक आ जाँतक उपरौटा आर जोर-जोरसँ घूमऽ लगलैक। गरजेँ लप-लप भरिक भीक जाँतमे देने जाइत जलैक। अरबा मकै, जाँतमे जाइते देरी हड़हड़ा उठैत छलैक।

—अहाँ एकसरिये अपस्याँत भेलि छी? परमिलिया कतऽ गेलि? एकसर हाथेँ की ई जाँत चलै छै? लोत्थे भारी छै!' बुलतीक माय परमिलिया-मायकेँ पुछलथिन।

परमिलिया माय तामसेँ भरलि छलि। अपन बेटीपर बमछि उठलि—ए बहीन दाइ! छौंड़ी बोलबाहरि भऽ गेलि अछि। कान

की सुनै अछि ? जो तँ उचिला-चाल भेल रहै छै सदिखन। कहलिऐ, एके ओसारो बाँकी छौ, तकरा पीसि ले, मुदा कहलमे रहय तखन ने ? सुनलकै, सुधिरियाक वऽर एलौ, बस मारलक दरबर, चल गेलि। कहैत रहि गेलिऐ, गे सून गे ! सून गे !.......'

पयर बारने तावत परमिलिया आबि गेलि छलि। मायक गप्प सूनि लेने छलि। कहलकैक—की सुनियौ ? की कहै छें, बाज ?'

—की ? भऽ गेलौ, फदका ?'

—हँ, भऽ गेलौ।' परिमिलिया ठोहराइत बाजलि !

—पिसिया कखन हेतौ ? हमरा सक नहि हेतौ जे हम सभक तोल बहैत रहबौ।' माय कहलकैक।

—के कहै छौ बहै लय तोरा ?' लगले परमिलिया उतारा देलकैक—एना चोट्टे चाउर छोड़बे तँ कोना हेतौ ? पसेरी भरि बज्जर सन मकै ओआरि देलें आ ।' परमिला अपने ठोरमे अस्पष्ट स्वरे भनभनाय लागलि—लोक कतौ जाउ नै, गप्प नै करौ.. .'

बुलती मायके भानस-भात करबाक छलनि। पाहुन-परक आयल छलनि। चारपरसँ बेटाक पोरा धोती उतारैत कहलथिन—हय परमिला ! एना बेलसि बात कोना बाजल जाइ छह ? कोनो बेजाय तँ नहिये लहलथुन अछि।'

—सैह बुझियौ ने अहाँ...'परमिलिया-माय बजिते छलि कि बुलती-माय दछिनबरिया घर चल गेलीह। बूझल छलनि जे परमिलियाकेँ ठोकले जबाब दऽ देबामे कोनो रोच नहि रहैत छैक।

परमिलिया

परमिलाकेँ मायक गप्प छनछनाकऽ लागि गेल छलैक। ओ मायक डेन पकड़ि कऽ हटबैत कहलकैक—जो, उठ। हम अपने पीसि लै छी।'

मायकेँ भमोड़ि कऽ उठा देलकैक आ धम्म दऽ बैसि गेलि। जाँतक चाकी एक बेर दलकि गेलैक।

—इह, करै अछि कोना छमरछैआ! कनकन करैत रहै अछि सदिखन। गे, तोँही एगो लोक छेँ कि संसारमे आरो क्यो छै?' विवशता आ तामससँ भरलि ओकर माय कहलकैक—बूझि पड़ै अछि, जग-दुनियाँमे रहैये ने देबहिन ककरो।'

परमिलिया मुदा कानमे ठेकी दऽ देने छलि मोने। कनठेकरि जकाँ कान मटियौने सुनने जाइत रहलि। जाँतक उपरौटा घिरनी जकाँ नचैत रहलैक। घन-घन-घन स्वरमे जेना ओकर मायक स्वर बिला गेलैक। तेलाह देहपर जेना पानि छहलि जाइत छैक तहिना अपन बातकेँ होइत देखि ओकर माय आर किछु बाजब छोड़ि देलकैक।

वस्तुतः परमिलिया मायक मोन छलैक जे दुनू माइ-धी मीलि कऽ पीसि ली किन्नहु ई विचार नहि छलैक जे परमिला एकसरिये मकै पीसय। मुदा से नहि भेलैक? परमिलिया-माय थोड़ेक काल थकमकायलि सन ठाढ़ि रहलि, पुनः भनभनाइत विदा भऽ गेलि—कर, जे करबेँ से।'

परमिलियाक माथपर घामक बुन्नसभ चुहचुहा गेलैक। कपारपर लटकल केशक लटपर चिक्कस उड़ि-उड़ि कऽ बैसि गेल छलैक। सोसे भौंह चिक्कसं उज्जर भऽ गेल छलैक। गाल, मुँह, नाक, दाढ़ी सभपर पाउडर जकाँ चिक्कस बैसि गेल छलैक। चाकी चिक्कसँ भरि गेल छलैक। ओकरा बाहर करब जरूरी भऽ गेलैक। ओ दोसर पथियामे बाहर करऽ लागलि।

बुलतीमाय कोम्हरोसँ अयलीह। एक नजरि परमिलियापर देलथिन आ गोइठा लऽ कऽ आगि आनऽ चल गेलीह।

रौदा कदमक छीपपरसँ बिला गेलैक। हांजक हांज कौआ-मैनासभ पच्छिम दिस कऽ उड़ल चल जाइत छल। बाहरमे ककरो पदचाप सूनि पड़लैक। परमिलिया चाकीमेसँ चिक्कस बहार करब रोकि कऽ छनभरि लेल अकानऽ लागलि। बुझि पड़लैक, जेना अमलेश आबि रहल अछि। ओ पुनः एकाग्र भऽ कऽ चाकीसँ चिक्कस बहार करऽ लागलि। एकदम तन्मय भऽ गेलि, जेना ककरो अयबा-जयबाक आभास ओकरा नहि भेटल होइक।

अमलेश पोथीपर अपन आङुरक नह पटपटबैत आयल, घरक चौकठि लगमे पनही बहार कऽ कऽ चल गेल। पच्छिम मुहक घर छलैक। पछबारी घरक देहरि पर उतरबारी कात जांत गाड़ल छलैक। आङन बेसी पैघ नहि। दछिनबारी-पछबारी कोनपर दऽ आङन अयबाक दुरखा छलैक। तेँ पुबरिया घरमे प्रवेश करैत काल अमलेशक नजरि परमिलिया पर नहि पड़लैक।

अमलेश औखन पीयर धोती पहिरने छल। नीक लगैत छलैक। घरमे प्रवेश करैत अमलेशक पीयर धोती पर पुनः एक बेर परमिलियाक नजरि जा कऽ घूमि गेलैक। चिक्कस निकालल भऽ गेल छलैक। आगाँ की करक अछि से जेना नहि फूरल होइक ताही मुद्रामे आ छलि। सहज प्रतीक्षित दृष्टिसँ फेर पुबरिया घरक मोखा दिस देखऽ लागलि।

फेर किछु मोन पड़लैक आ जाँतमे लप भरि झीक दऽ कऽ पीसऽ लागलि।

अमलेश घरमे अपन पोथीसभ राखि, बाहर चल आयल। माय आगि आनऽ चल गेल छलथिन। पिउसि आ बहीन बुलती दुनू बूलऽ चल गेल छलैक, पुबारि टोल। आङनमे क्यो कतहु नहि छलैक। खाली पछबारी देहरिपर परमिलिया जाँत पीस रहल छलैक।

जिज्ञासामे थोड़ेक काल पुबारी देहरिपर पच्छिम मुहेँ ठाढ़ रहल। फेर पुछलकैक—कतऽ जाइ गेलै ई सभ ?'

किन्तु कोना उत्तर नहि भेटलैक। परमिलिया पिसिते रहलि। अमलेशकेँ कनेक तामस भेलैक आ हंसियो लागि गेलैक—कहू, केहन अलहड़ि छै छौंड़ी! के आयल-गेल तकर कोनो सुधि नहि। एतामे चोर-चुहाड़ तँ लोढ़िये-बीछिकऽ लऽ जयतै !'

—कतऽ जाइ गेलै ?' अमलेशक बाजब फेर जाँतक घर्र-घर्रमे पिसा गेलैक। परमिलिया पिसिते रहलि।

अमलेश खूब जोरसँ कहलकक—गय पिसनाहरि. तोरे कहै छियौ ?' परमिलियाक हाथक गति एके बेर थम्हि गेलैक।

—के ? तों छह हौ ?' परमिलिया मूड़ी उठा कऽ तकलक।

—एना सुधि रखबें तखन तँ कयो किछु चोरा कऽ लैयो जयतौ तैयो ने बुझबिही।'

—नै सुनलिऐ।' ठोरपर एक रत्ती मुस्की आबि गेलैक। बाजलि—हौ, सासुरसँ अयलह आ विनु दुअरिछेकाइ देनहि घर चल गेलहक ?'

—ओ ! देहरि छेकाओनो चाहियौ ?' अमलेश हँसैत बाजल।

—सासुरसँ एना पड़ा किएक एलहक ? सासुरमे मोन नै लगलह ?' परमिलिया जिज्ञासा कयलकैक।

अमलेश जेबीसँ सुपाड़ीक खण्ड बहार कऽ मुँहमे दैत उत्तर देलकैक—ई फाइनल थिकै। कलास छोड़ि देने की होइ छै से कोना बुझबही !,

परमिलिया सतर्क आँखिजे अमलेश दिस तकलक। ओकर सौम्य मुख-मण्डल, गहुमा रंग, कपारक दहिना कोनपर लटकल केश, ठोरपर बिहुँसो···सभ मिला-जुला कऽ अमलेशक आकृति नीक लागि जाइत छलैक।···अयनामे अपन मुँह देखबाक अनायासे इच्छा भऽ गेल छलैक।

ओ मूड़ी झुका कऽ अनेरो चाकोसँ चिक्कस बहार करऽ लागलि।

परमिलिया

पथियाक चिक्कसके सरियझैत पुछलकैक—की हौ ! कनियाँ केहन छह ? पसिन्न पड़लह ? हेतौ तँ खूब सुन्नरि, गोरि-नारि…।'

अमलेश थोड़ेक लजा गेल। फेर एकटा अनरोधक स्वरमे बाजल—गोराइये सभ किछु थिकै ? दुलारे माय-बाप सिक्का चढ़ौने छैक। ने सी अच्छरक ज्ञान छै ने एकटा खढ़ उसकयबाक लूरि। काजमे तोहर कनगुरियो बरोबरि नहि…।'

बीचमे अमलेश अटकि गेल। मुँहथरि लग माय आगि लेने आबि गेल छलथिन।

परमिलियाक कान अतृप्त भऽ उठलैक। भेलैक जे अमलेश किछु आरो बाजय। ओकर मानसवृक्षक पात-पातसभ जेना एकै बेर सिहरि गेलैक। अपन बाँहिपर दृष्टि गेलैक। नाम, गोल सुडौल बाँहि गोर नहि छलैक तकर क्षोभ विलीन भऽ गेलैक। अमलेशक कनियाँसँ अपन मिलान करऽ लागलि। अमलेशक कनियाँ गोरि छैक, सुन्नरि छैक, मुदा दुलारेँ दूरि भेलि। काजक लूरि नहि। परमिलियाकेँ गौरव भेलैक जे ओ गोरि नहि अछि तेँ दुलारे दूरि तँ नहि अछि ? काजुल तँ अछि ! टोल भरिमे नाँ बाजल छैक जे परमिलिया काज करऽमे भूत अछि। मुदा…मुदा एकटा बात खौंक जकाँ ओकरा मोनमे गड़ि जाइत छलैक। कालेजमे पढ़निहार वऽरकेँ पढ़लि कनियाँ चाही ने !

ओ अपन मोनक कनवासपर एकटा चित्र बनबऽ लागि गेल

छलि--गहुमा रंग, नाम जुलफो, हाथमे कोलेजिया किताब। पीयर धोती, रेसमी चद्दरि, लाल पाग, कत्थी रंगक कोट, मचमचौआ जुता। कपारपर चानन, कजरायल आँखि, ठोरपर मुस्की···। चित्रमे मुस्कीक रंग भरिते देरी ओ चित्र अमलेशक भऽ गेलैक।

परमिलिया हाँइ-हाँइ कऽ अपन मोनक ओहि चित्रकेँ लेपि-पोति कऽ मेटयबाक चेष्टा करऽ लागलि।

बुलतीमाय आगि लऽ कऽ आङन आबि गेलीह, देहरिपर बेटाकेँ ठाढ़ देखलनि। किछु पुछबासँ पहिनहि अमलेश जलखै बनयबाक लेल कहि कऽ बाहर चल गेल।

परमिलियाकेँ अपन ध्यान समेटि लेबऽ पड़लैक। मोनमे भेलैक जे एक बेर कहि दैक—ए काकी! अमलेश आब बड़ दीब लगै अछि देखऽमे—मुदा से मुँहसँ बाहर करबाक साहस नहि भेलैक।

साँझ देबाक बेर आब कनेके कालमे भऽ जइतैक। किरपाल दीदी हाथमे पथिया लेने आङनमे आबि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलथिन। बेचारो मसोमात छथि। कयो हरिया ने गोहरिया। लूटि लाउ, कूटि खाउ। जा धरि जुआनि छलीह ता ककरो नेहोरा नहि रहैत छलनि। दिन भरिमे चारि-चारि उखरि धान एकसरिये कूटि लैत छलीह। किरपाल दीदी विधवा छलीह, बाल-विधवा। तेँ बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़ि धरि हुनका लुलुआ लैत छलनि। रेहल-खेहल

परमिलिया

भऽ गेल छलनि। आब थाकल-ठेहियायल जिनगीमे अनके सहयोगक आश रहि गेल छलनि।

ओ एक बेर जाँत पिसैत परमिलिया दिस बड़ निरीह भावसँ तकलथिन आ एहि प्रतीक्षामे छलीह जे आब ओ झझकारि कऽ बाजि लेत।

मुदा परमिलिया अपन हाथ रोकि कऽ हुनका दिस तकलकनि तँ ओहिमे स्वस्तिक आभास भेटलनि। दीदी आश्वस्ते होमऽ जा रहलि छलीह कि बुलतीमाय गोंहछि कऽ बाजि उठलथिन—जरलाहाक, सौंसे टोलक हुड़बा भऽ गेल ई जाँत।' जाँत नीक छलनि, पाथर नीक, कुटनि नीक तेँ अङ्गरसँ झीक खाइत छलैक आ तेँ भरिटोलक लोक पिसिया करऽ बुलती मायक आङन चल अबैत छल। बुलतीमाय दीदीपर गोंहछल स्वरमे कहलथिन—अय! दाइ! साँझोभरली वस्तु-जातकेँ विसराम करऽ देथुन। भरि दिन तँ चलिते रहै छै।'

दीदीक मुँह अनेरे कननमुँह आ ताहिपरसँ ई बोल! अप्रतिभ भऽ गेलीह। ओ चूरि जयबा लेल उद्यत भऽ रहलि छलीह। एतबेमे परमिलिया बाजि उठलि—अय काकी! कने पीसऽ दियौन। हमहीं पीसि दै छियनि, ने तँ रातिमे ठक दऽ उपासे पड़ि जयतीह।'

ओ बुलतीमायक उत्तरक विनु प्रतीक्षा कयनहि आङनमे ठकुआयलि ठाढ़ि किरपाल दीदीक हाथसँ पथिया लऽ लेलकनि। अपन मकें थोड़ेक बाँकिये छलैक तकरा एक कात घुसका देलकैक।

दीदोक मके पीसऽ लेल ओकर सबल मांसल बाँहि घूमऽ लगलैक जांतक हाथरपर। दीदो उपकारक भारसँ तऽर भऽ गेलीह। ओ कहलथिन—गय दाइ ! हमहू लागि दऽ दै छियौ।

—ई चकत्ता सन देह कथी लेल छै ?' आ परमिलिया अनघुन पीसऽ लागलि।

बुलतोमायकें कनेक अधलाहो लगलनि। पुनः दीदीपर दया भेलनि आ परमिलियापर पड़ैत दृष्टि स्नेह सिक्त भऽ गेलनि।

क्षणे भरिक पश्चात् परमिलियाकें अबेर होइत देखि ओकर माय हनहनाइत-पटपटाइत अयलैक—की गे ! एखन धरि पीसल नहि भेलौ ?'

सोझाँमे दीदोकें बैसलि देखि आभास लागि गेलैक जे एखन हुनके पिसिया होइत होयतनि। परमिलिया माय बिढ़नी भऽ गेलि।

परमिलियाकें बातक सहाज नहि होइत छलैक। ओ अधिकारक स्वरमे कहलकैक—कहि दै छियौ, चल जो एतऽसँ चुपचाप।'

फेर बुलतोमायकें परचारैत बाजलि—की काकी, हम तखनसँ बैसलि छी कि पिसिते छी !'

—तः ! बेचारी तखनसँ जो-जान छोड़िकऽ पिसिते अछि।' बुलतोमाय गप्पकें शान्त करैत बजलीह—जाउ ने अहाँ। आब तँ भऽ गेलै। पाछाँसं लेने अबो अछि।'

परमिलिया-मायक क्रोधपर अकस्मात् पानि पड़ि गेलैक। ओ

परमिलिया

शान्त भऽ गेलि—अय ! हमरा तँ सोच लेने अछि जे जाहि घरमे जयतौ, ताहि घरमे बास कोना होयतौ ? एकर बोल लऽत कोना होयतौ ? उकसोबास छै लिखल।'

—हे ! से सभ नहि कहियौ। घर-बर अपन-अपन करम-भाग लऽ कऽ होइ छै।' बुलतीमाय कहलथिन।

दिदियोकेँ परमिलियाक प्रति मात्सर्य देखयबाक अवसर भेटलनि—ई की बजै छी अहाँ अय कनियाँ ! एहन सोन सन धीयाकेँ के उकसोबास देत अय ?'

मनुष्यक ई सामान्य स्वभाव थिकैक जे जखन कोनो आलोचना वा टीका-टीप्पणी होइत छैक तँ ओ तनि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। विरोध, विद्रोह आ प्रतिशोधक भाव जागि जाइत छैक। किन्तु जखन प्रशंसा कयल जाइछ, सद्‌गुणक व्याख्यान कयल जाइछ तँ अनायासे उद्धतसँ उद्धतो व्यक्तिमे विनम्रता, विनयशीलता आ संकोच आबि जाइछ। विशेष कऽ कुमारि कन्याक विवाहक प्रसंग उठाओल जाय, ओकर नारी गुणक प्रशंसा कयल जाय तँ अनायासे ओकर मुखमंडल लज्जा ओ संकोचसँ रक्ताभ भऽ जाइत छैक। परमिलियाकेँ बुलती-माय ओ दीदक गप्प सूनि कऽ संकुचित होयब स्वाभाविक छलैक।

परमिलियाकेँ होइत छलैक जे जांतेमे गड़ि जाय। ओ अपन मूड़ीकेँ भुकबौत-भुकबौत जांतमे सटा लेने छलि। ओ अन्न-धुन्न

पिसने जाइत छलि। ओकर कपारपरक केशक लट चिक्कसकें छूबि-छूबि लैत छलैक।

माय थोड़ेक काल ओकरा दिस तकैत रहलैक, फेर कहैत विदा भऽ गेलैक—जल्दी अबिहें ...।'

—बेस।' परमिलिया बिनु तकनहि कहि देलकैक। फेर जेना एक टा स्तब्धता विराजमान भऽ गेलैक।

परमिला पिसैत-पिसैत अपन देह दिस तकलक। अपन रंग दिस तकलक। परिश्रमक कारणे घमायल आ चिक्कस पड़ल मांसल बाँहि दिस तकलक। नीचाँ-ऊपर होइत धड़कैत छाती दिस तकलक। झिरझिर खसैत चिक्कस दिस तकलक। ओकर नजरि जाहिठाम अमलेश ठाढ़ छलैक ताहिठाम चल गेलैक। इच्छा तरंगित होमऽ लगलैक—अमलेश फेर ओहीठाम ओहिना जँ ठाढ़ होइत!

जाँत रोकि कऽ बुलतीमायकें पुछलकनि—काकी, अमलेश लय जलखो बनौलिऐ? कहि गेल छल।'

—कहाँ बनौलिऐ गय।'

बुलतोमाय उत्तर दैते छलथिन कि अमलेश धम-धम कऽ पहुँचि गेल।

परमिलिया कहलकैक—हौ! बहुत दिन जीबह, एखने चर्चा भेलह कि तों पहुँचि गेलाह।'

अमलेश परमिलिया दिस चकित भऽ ताकि कऽ कहलकैक—के छें परमिल? एखन धरि पिसिते छहिन? मरि जयबें काज करैत-करैत।' फेर मायकें हँसैत कहलकैक—माय! परमिला सन काजुल पुतोहु जँ तोरा भेटितौ तँ धन्न भऽ जैतें।'

परमिलाकें भेलैक जेना सुनिते रही। अमलेश अविराम बजैत रहय आ हम सुनैत रही।

एकटा रहय उतमी

सौंसे बजार अस्त-व्यस्त जकाँ छलैक। ककरो गप्प करबाक पलखति नहि छलैक। तेँ बाटक कातमे बैसलि घसबाहिनी दिस ककरो ध्यान नहि जाइत छलैक। जुमरतनी, दहौड़ी, सितिया आ कमली सभकेँ अपन-अपन उठौनावला छलैल। जुमरतनी एकटा होटल मालिककेँ घास दैत छलैक। दहौड़ी एकटा सूड़ीकेँ थयने छलि। सितिया एकटा ओकील साहेबक गायक लेल घास लऽ जाइत छलि। कमलीक देहपर जुआनीक सुरखी छलैक। देहमे एक प्रकारक दपदपी छलैक। से, ओकर घास किनबाक लेल बाकरगंजक उतरबरिया मोड़पर सभसँ पच्छिम दिस जे मकान छैक तकर बाबू एकटा गाये कीनि लेने छल।

बाटक कातमे एकसरे उतमी बाँचि गेल छलि। आन संगीसभ उठौनावलाक ओहि ठाम चल गेलि छलैक। ओ सभ घास दैत

छलैक, खड़ाखड़ी पाइ लैत छलि आ विदा भऽ जाइत छलि। बड़ बेसी भेलैक तँ कनेक हँसि-बाजि लेलक। उतमीकेँ से सभ नहि छलैक। ओकरा बाट ताकऽ पड़ैत छलैक बाटक कातमे ठाढ़ि भऽ कऽ। आगांमे घासक छप्पा लागल रहैत छलैक आ आँखि उत्सुक भऽ कऽ प्रत्येक अयनिहार-गेनिहार दिस तकैत रहैत छलैक।

उतमीकेँ जतबे देरी होइत छलैक मोन ततबे चंचल भेल जाइत कलैक। ओकर सोनमा-बापक मोन आइ बेसी खराब भऽ गेल छलैक। मारि कहूँ दवाइ-बीरो करैत-करैत थाकि गेलि। कय टा गहबरपर डाली लगा आयलि छलि। कय ठाम छागर, बाभन-भोजन आ कुमारि-भोजन कबूलि आयलि छलि। एक ठामक भगतकेँ करिया परबा आ एक बोतल दारू कबूलि आयलि, मुदा ताहिसभक किछु फल नहि भेलैक आ सोनमाक बापकेँ ओहिना साङरही पकड़ने रहलैक।

उतमी चंचल मोने ठाढ़ि भेलि देबालसभपर तरे-उपरी साटल पोस्टरसभकेँ देखि रहलि छलि। ओहिमे रंग-विरंगक अच्छर आ फोटो सभ। जोड़ा बड़द, खोपड़ी, ताड़क गाछ, साइकिल, बैल-गाड़ी, बाकस,...देखैत-देखैत मोन जेना अकछि गेलैक। बाटक कातमे, चौबट्टीसँ कनेक हटि कऽ ओ घास रखने छलि। बीच चौराहापर पुलिस ठाढ़ छलैक जे घूमि-फीरि कऽ ओकरे दिस ताकऽ लगैत छलैक। पुलिसक ओ तकनाइ ओकरा काँट जकाँ गड़ऽ लगैत

छलैक। आ पड़ा जाय चाहैत छलि, मुदा आगाँमे राखल घासपर नजरि जाइत छलैक जाहि घासमे ओकर सौंसे परिवारक आजुक खर्चा नुकायल छलैक।

क्यो काम्हरोसँ आबि जाइक आ अनगरजू जकाँ मोला कऽ चल जाइक। एक गोटा आठ आनासँ फाजिल देबा लेल तैयार नहि भेलैक। उतमीकेँ कमसँ कम एकोटाका चाही। ओकरा आगाँ सौंसे घर नाचि गेलैक आ ओ नकारि देलकैक।

मोन तँ ओकर अरिया गेलैक। जहिया ओ घास लऽ कऽ अबैत छलि तँ एहिना भऽ जाइत छलैक। ओकरा घासक क्यो लेबाले ने रहैत छलैक। उतमी उठौना धऽ लेबऽ चाहैत छलि। मुदा सभ दिन आबिये ने पबैत छलि आ उठौनावलाकेँ ई सहाज नहि। तेँ उतमीकेँ तावत धरि अँटकऽ पड़ैत छलैक जावत क्यो किननिहार आबि जाइक। मोल-मोलहै करऽ पड़ैत छलैक।

ओहि दिन तँ भोटक हल्ला ओकरेपर विपत्ति खसा देलकैक जेना। एक तँ रौदो दुआरेँ घासे कम छलैक आ सेहो लेनिहार नहि। घासवाली सभक एकटा झुंड फेर अयलैक। ओकरासभकेँ देखि कऽ उतमीक मोन हहरि गेलैक—बाप रे! आब तँ आरो ने क्यो हमर घास कीनत।

ओ घासवालीसभ ओहि ठाम घास राखि कऽ झाड़ि-झूड़ि लेलकैक आ छिट्टामे भरिकऽ उठाबऽ लगलैक। उतमी एक बेर सन्तोखक साँस लेलक जे ईहो सभ उठौनामे चल जायत।

एकटा रहय उतमी

घास बिकबामे देरी होइत देखि आ ओहि चौराहाबला पुलिसकेँ अपना दिस बेर-बेर तकैत देखि आ सोनमा-बापक अवस्था मोनमे अबैत देरी ओ छटपटा उठलि।

दूर, मोड़पर देखलकैक ओकर अपना हेंड़क घासवालीसभ खाली छिट्टा काँखतर दबने चल अबैत। ओकर छाती धड़-धड़ करऽ लगलैक जे सभ चल जायति, हम तँ एकसरे पड़ि जायब।

एतबेमे एकटा गाहक आबिकऽ घास मोलबऽ लगलैक। उतमीकेँ बूझि पड़लैक जेना ई गाहक जा नहि सकैत अछि। ओहि गाहकक आँखिसँ बूझि पड़ैत छलैक जेना ओ आन घासवालीकेँ नहि देखि चिन्तामे अछि।

उतमी अपन घासक दाम सवा टाका कहलकैक।

—बेचबाक नहि छौक जेना, दस आनामे देबही, की विचार छौक ?'

—नञि ओ ! एतेक घास दस आनामे के देत ? खालो ननघस्सी आ पोआङ छै। डेढ़ टाकाक घास छै। अहाँकेँ चारि आना कम कऽ देलहुँ।' उतमी बाजलि। ओ लगमे अबैत अपन हेड़ियाकेँ देखलक आ पश्चिम आकाश दिस ढरैत सूर्यकेँ देखलक। एक बेर गहिकी नजरिसँ ओहि गाहककेँ देखलक। अपन साँय मोन पड़लैक। भरि पेट चालीवला सोनमा बेटा मोन पड़लैक। ओ आकुल स्वरमे बाजलि—अठारह आनामे मंजूर अछि ?'

—ऊहुँ ! बारह आनासँ फाजिल नहि। ओतेकमे देबही ?'
गहिकी अपन निर्णय देलकैक।

—नै ओ !' उतमी बाजलि—कोनो की फोकटके माल छै !'

—बस ?'

—बस।'

गाहक आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत कहलकैक—चौदह आना देबौक देबेँ तँ ला।'

—एकटाका मे देब।' उतमी जाइत गाहक दिस सतृष्ण नजरिसँ तकैत कहलकैक। गाहक अनठौने जकाँ बढ़ल जाइत छलैक।

दहौड़ो, सितिया, जुमरतनी सभ लग आबि गेल छलैक। एकटा सोर करैत कहलकैक—गय उतमी ! चलबेँ नहि ?,

—हँ हं, यैह चलो छी।' उतमी उतारा देलकैक।
एतबेमे बाटपर बीस-पचीसटा रिक्सा हड़हड़ाइत चल गेलैक। सभपर रंग-विरंगक साड़ी पहिरने मौगी सभ। सभ रिक्साक पाछाँमे रंग-विरंगक पोस्टरसभ साटल।

उतमीकेँ ओमहर दिस तकबाक पलखति नहि छलैक। ओ गाहकके सोर कलैत बाजलि—औ बाबू ! सुनू औ !! कोनो दामो-काम होइ छै कि ओहिना एमहरसँ अयलहुँ आ ओमहर चल गेलहुँ ?

गाहक ओकर बात सूनि घूमल।

एकटा रहय उतमी

—लाउ पन्द्रहे आना लाउ।' उतमी आतुरतासँ कहलकैक। डर छलैक जे फेर चल ने जाय।

—नहि, नहि, चौदह आनासँ बेसी नहि।' गाहक अडिग छल।

उतमी छिट्टाक घासकेँ उनटबैत कहलकैक—लियऽ लियऽ, लाउ दाम। मङनीयेमे बूभू।'

ओ खाली छिट्टाकेँ काँखतर लैत दहिना हाथ पाइ लेबाक लेल बढ़ा देलकैक। मोन ओकर दौड़ि गेलैक गामपर—साङरहीवला. सांय, चालीं भरल पेटवला सोनमा बेटा, अन्न-पानिसँ खाली ओ घर। मोन अनायासे हिसाब जोड़ऽ लागल छलैक—नोन, कड़ूक तेल, डिबियाक तेल, सबुरदाना, खेसाड़ी, मड़ुआक चिक्कस··· ओ मोने-मोन थाकल जाइत छलि। एतबेमे ओकरा हाथपर पाइ झन्न दऽ उठलैक। मोटरक घरोहि घनघना उठलैक आ ओकर ध्यान टूटि गेलैक। आ दौड़ि कऽ अगाँ बढ़लि, अपन हेंड़मे जा कऽ मिज्झर भऽ गेलि।

वसबाहिनीसभक ओ झुंड एके बेर छिड़िया गेलैक कारण पाछासँ मोटर आ आगासँ टायर गाड़ी आबि रहल छलैक। टायर गाड़ीक पाछासँ एकटा जुआन-जहान कहैत अबैत जलैक—घर छाप मोन राखब, बिसरब नहि।'

बहलमानकेँ डटैत कहलकैक—अय, जल्दीसँ हाँक ने? आब समय थोड़ छैक।'

बहलमान बड़दक नाङहि ऍ ठि कऽ टिटकारी मारलकैक आ गाड़ी आगा बढ़ि गेलैक ।

ओकरा देखिते कमली चीन्हि गेलैक। ओ बाजलि—गय! ई तँ ओह लफन्दराहा मनसा छियौ, जकरा कय बेर मारि करैत देखने छलिऐ।

ओ धड़फड़ायल घासवाली लग आयल। एक बेर चकित दृष्टिसँ चारू कात तकैत बाजल—गय! रुपैया भेटतौक, भोट देबऽ लेल चलौ चलबेँ ?'

सभ घसवाहिनी ठकमका कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। सभक मोनमे शंका जकाँ जागि गेलैक। किन्तु सभक बीचमे आँखिए-आँखि किच्छु गप्प भऽ गेलैक। कमलो चमकि कऽ बाजलि—हो, कथी भोट-तोट करै छह ? हम नहि बुझै छियह।'

ओ कने अप्रतिभ जकाँ भऽ गेल, मुदा छने भरिमे रंग बदलि गेलैक ओकरा आँखिक। ओ जबाब देलकैक—गय कमली! तोँ सभ तँ सत्यानास धरि बुझै छहिन। तोहर सभक नस-नस चिन्है छियौ।'

दहौड़ी कमलीकेँ तऽरे-तर कुब्बीसँ मारलकैक। कमलीक देह सिहरि जकाँ गेलैक। ओहो जेना ओहि छौंड़ाकेँ जड़िसँ छीप धरि चिन्हैत छलैक।

पयजामावला ओ पुरुष कने मद्धिमे स्वरमे एहि बेर कहलकैक

—तोरा सभके झूठ बुझाइ छौ ? आगाउए टका लऽ ले। किछु करऽ पड़तौ थोड़े। ककरो नामपर जेहें आ कागत जे देतौ से घरबला छापक बाकसमे खसा दिहैक।'

—आ कहूं पकड़ि लेलक तँ ? नहि गे दाइ !! नहि जायब !' सितिया बाजि कऽ माथ परक नूआ सरियाबऽ लागलि।

चारिये दिनुक बाद होमऽ वला चौठीचान सभक मोनमे चमकि उठलैक। गोल-गोल लाल-लाल पूड़ी आ खीर गमकि उठलैक। उतमीकें चाली भरल पेटवला सोनमा आ साङरही पकडने सोनमाक बाप मोन पडलैक। ओकर मोन चंचल भऽ गेलैक। आरो गोटेक मोन चंचल भऽ गेल छलैक।

आ पुरुष सितियाक बोलपर बाजल—मारि तोहूँ सभ खटरासे करै छें। कोना मङनी कहै छियौ ? एना अगराइत जाइ छें जेना आब कहियो बजारमे घासे ने बेचबें।'

एहि अंतिम वाक्यमे ओकर धिरौनाइ स्पष्ट छलैक। एके बेर जुमरतनी, दहौड़ी, सितिया, कमली, उतमी सभक देह सिहरि उठलैक। बूझि पड़लैक जेना ओ छौंड़ा ओकरा-सभक मुँहमे जाबी लगा देलकैक। आ लफन्दराहा जे निडर भऽ कऽ नीक मुँह-ठानवाली कुजड़नी, कि दूधवाली, कि गोइठावाली, कि घासवालीकें बोली कसि सकैत छलैक। सितियाकें ओहि दिनक गप्प नहि बिसरल जाइत छलैक जखन एकरा इसारापर एकटा रिक्साबला ओकरा

धक्का दऽ देने छलैक आ ओकर भरलो छिट्टा घास पीच सड़कपर छिड़िया गेलैक। ओ अपने घुरमुड़िया खा कऽ खसि पड़लि छलि। ओकर देहपरसँ नूआ हटि गेल छलैक। ओकरा खसैत देखि रिक्सा-वला, दोकानवला, खोनचावला सभ हँसि देने छलैक। ई छौंड़ा आबि कऽ भरि पाँज कऽ उठा देने छलैक आ सभ गोटे फेर हहारो दऽ देने छलैक। सितिया द्रौपदी जकाँ ठुक्कू-मुक्कू भेलि ठाढ़ि रहि गेलि आ जाहि-जाहि अंगपर ओकर हाथ पड़ल छलैक से सभ जेना कनकनाय लागल छलैक।

एखनो ओहो छौंड़ाकेँ सामने देखि कऽ सितियाक ओ अंग सभ फेर जेना कनकनाय लगलैक। प्राय: ओहि घसवाहिनीक हेड़मे सभक संग एहिना कोनो-ने-कोनो घटना घटल छलैक।

कमली ओकरासभमे सभसँ निडर लगैत छलि। ओ सभक दिस तकैत बाजलि—को गे! चलौ चलबिहिन ?'

सभक आँखिमे आशंकासँ भरल लोभ आ भय दुनू संगहि संग उतरि अयलैक। जुमरतनी सुहकार दैत कहलकैक—चल, एक बेर देखि आही।'

सभ एक दोसराकेँ तकलकैक। सभक आँखिमे स्वीकृति झलकि रहल छलैक। सभ आगाँ बढ़ि गेलि—जेमहर दिस ओ टायरगाड़ी जा रहल छलैक, ओ पयजामावला जाइत छलैक।

उतमी एखनो धरि गुनधुनेमे छलि जे—जाउ, की नहि जाउ।' सभकेँ आगा बढ़ैत देखि अनायासे ओकरो पयर बढ़ि गेलैक।

मतदान-केन्द्र ओहि ठामसँ पाँच-छौ मिनटक बाट छलैक।

काँच बाँसक फट्ठासँ घेरल। चारि-पाँचटा पुलिस लाठी लेने एमहर-ओमहर ठाढ़। चारू कात लोकसभक भिरम पड़ैत। सभ अपना-अपनी कऽ फिरीसान, जेना माय-बाप मरि गेल होइक।

पयजामावला आकरासभकेँ ठाढ़ होयबाक लेल कहलकक। सितिया एखनो अपना अंगकेँ अपनेमे समेटने जाइत छलि। उतमी अपने गुनधुनमे डूबलि छलि।

दहौड़ो पयजामावलाकेँ कहलकैक—औ बाबू! रुपैया हम सभ पहिनहि लऽ लेब। बात जानी साफ। पाछू के दतखिस्टी करत ?'

—तोहर रुपैया कयो पचा लेतौ ? भेटबे करतौ की।' पयजामा-वला कनके जोरसँ बाजल—ई रुप्यैया-रुप्यैया कऽ कऽ तोँ सभ चौपट्ट करबेँ।'

—औ बाबू! तँ कोनो बेजाय कहलक ? अपन पहिनहि साफ-साफ कऽ लू।' जुमरतनो आ कमली संगहि बाजलि।

पयजामावला कनेक काल किछु सोचि एकटा आदमीकेँ लऽगमे बजौलकैक आ किदन दुटप्पी रुप्प कऽ कऽ एकरा सभ लग अयलैक। सभक हाथमे एकटा कऽ दुटकही नोट धऽ देलकैक। सभ जेना चौंकि उठलि। जेना उपकारक भारसँ दबि गेलि। बूझि पड़लैक जेना ओ पयजामावला आदमीसँ देवता भऽ गेल। विश्वास नहि होइत छलैक—माछ, आम, लिच्ची आ जामुनक पाइ रुपाइ पचा गेनिहार ई पयजामावला कोना बदलि गेल ? दू-चारि दिनक कमाइ एके दिनमे—एके छनमे !!

मनुक सन्तान

आ उतमो तारतम्यमे पड़लि छलि जे ई दुटकही सुपतक कमाइ भऽ सकैत छैक ? एक मोन कहलकैक—उँह ! मोट देहो मङनीमे ? सभ रुपैये लेलक।' दोसर मोन कहलकैक-उँहुह ! कमली आ गुलबिया, सोमनी आ सरजुगियाक आँचरमे जे कहियो कऽ टका बान्हल देखि कऽ हमर मोन घिना जाइ छल ताहिसँ की कोनो कम घिनोन छै ई टाका !'

उतमोक मोनमे होमऽ लगलैक जे एहि टाकाकेँ ममोड़ि-समोड़ि कऽ फेकि दो आ पड़ा जाइ। ककरो आङनमे जा कऽ नुका रही जे देखय नहि कयो आ ई टाका लेबऽ सँ जान बाँचि जाय।

ओ पयजामावला सभकेँ अपना कैम्प दिस बढ़टाबऽ लगलैक। उतमोक विचार-तन्तु टूटि गेलैक। मोनक क्षणिक विद्रोहक भीत ढहि गेलैक। सभक संग ओकरो बढ़ि जाय पड़लैक। ओ जाइत-जाइत आँचरमे बान्हल घामवला पाइ डाँडमे खोंसि लेलक। जेना ओ दुटकही आ घमवला पाइकेँ एकट्ठा नहि करऽ चाहैत हो।

कैम्पमे सभकेँ बैसा कऽ हाथमे एक-एकटा पुरजी दऽ देल गेलैक, सभकेँ नाम रटा देल गेलैक। कमलीकेँ सोनादेवी, छहौडीकेँ अनुरागवती, सितियाकेँ संभाकलबागिन आ जुमरतनी कुजड़नी छलि तें ओकरा हमीदा बेगमक नाम देल गेलैक। उतमोकेँ नाम भेटलैक मनभफनिया ममोमात। कयो ओकरा दुनू हाथक एक-एकटा ओनकेँ नहि देखलकक। मुदा उतमोक मोन मनभफनिया मसोमातकेँ स्वीकार करऽ लेल राजो नहि छलैक जेना। ओकरा मोन पड़लैक अपन रोगियाहा साँय, साङरहीमँ पीड़ित, खाटपर पड़ल कहरैत।

एकटा रहय उतमो

ओकर हाथ अनायासे अपना हाथक बोनपर चल गेलैक। ओहि अहिबातक चेन्हकेँ भरि मुट्ठी कऽ पकड़ि लेलक।

उतमी एक बेर अपना माथकेँ झमाड़लक जे ई विचार सभ मोनसँ हटि जाय, मुदा ओकरा माथमे बिचारक खदकी बनिते रहलैक। ओ दुटकही नोट सभ विचारक विहाड़िमे उधियाइते रहलैक। बुझि पड़ैक जेना ओ माथक भीतरमे फरफरा रहल अछि। मोन घिड़नी जकाँ नाचऽ लगलैक—रुपैया ली···नहि ली··· ई सभ छल छै, कपट छै···पाप होइत छै···उँह एते गोटे लेलकै, सभकेँ की पापे होयतै ?···किदन होयतै···आ मसोमात·····?'

उतमी आगाँ सोचि नहि सकलि। एके बेर 'चलीत चल' कहि कऽ, सौंसे कैम्पक लोक ठाढ़ भऽ गेल छलैक। सभ कहैत छलैक—घर छाप मोन रखिहें, नाम नहि बिसरिहेँ।'

भोट देबऽ जाइत काल सभक मोन धुकधुक करैत छलैक। 'कहीं बूझि गेल तँ की होयतैक ?' ग्रैह प्रश्न सभक माथमे छलैक। मुदा ककरा फुरसति छलैक एहिसभक खोदबेद करबाक। आ तेँ सधबा उतमी हाथमे लाहक बोन पहिरनहुँ मनझनिआ मसोमात बनि कऽ भोट दऽ अयलैक।

उतमी भोट दऽ कऽ बाहर भेलि तँ फक्क दऽ निसाँस छोड़लक, मुदा मनझनिआ मसोमात ओकरा छातीकँ खधाड़ऽ लगलैक। ओकरा बूझि पड़लैक जेना ओ मनझनिआ मसोमातसँ उतमी मसोमात भऽ गेलि। ओकर सोनमाक बाप मरि गेलैक आ लोक ओकरा चचरीपर लऽ गेलैक आ मौगी सभ आबि कऽ ओकरा हाथक

लहठी फोड़ि देलकैक'''ओकर माथक सिन्दूर मेटा देलकैक आ ओ उतमी मसोमात बनि गेलि''' ।

कमलो आ दहौड़ीक खिखिअयनाइ सूनि ओकर ध्यान टूटि गेलैक। ओकर मोन आशंकासँ भरल जाइत छलैक। ओ आब जल्दीसँ जल्दी घर जा कऽ सोनमा-बापक सौंसे देह हँसोथि कऽ देखऽ चाहैत छलि। देखऽ चाहैत छलि जे ओकर हाड़ ऊगल छातीमे धुकधुक्की छैक। ओ एखन सधबा अछि। मनभ्कनिआ मसोमात एकदम फूसि थिक।

ओ मोने-मोन चौठी चानकें एक हत्था केरा कबुललकनि। चौठी चान जेना ओकर कबुला सूनि कऽ आश्वासन देमऽ लगलथिन।

एतबेमे कमली ओकरा पाँजरमे गुदगुदी लगा देलकैक। उतमी चिहुँकि उठलि। कमली हिहियाइत बाजलि—गेहे उत्तो! की पोको मौआ जकाँ मूड़ी निहुड़ौने छें। हँसबें-बजबें से नहि? आइ कोन फिकिर गे? आइ तँ बस'''

सभ एके बेर खिखिया कऽ हँसि देलकैक।

उतमी ओकरा दिस ताकि कऽ बलहँसी हँसैत कहलकैक—ओ तँ मोन-मोन हिसाब जोड़ै छलिऐ जे कोना खर्च करबै एहि रुपैयाकें'''

उतमी आँचरक खूटमे बान्हल रुपैया देखबऽ लगलैक। मुदा ओ सन्न दऽ रहि गेलि। कमलोक नजरि ओकरा आँचरक खूटपर चल गेलैक जाहिमे खाली गिरहक चेन्ह छलैक। कमली बाजलि—गय उत्तो! कहाँ छौ एहिमे रुपैया?'

सौंसे हेँज गम्भीर भऽ गेल।

उतमी आँचरक खूटकें मुट्ठीसँ जँतने बाजलि—जानू कतौ गीर पड़लौ। गिरह ढाल पड़ि गेलौ।'

उतमीक मानमे ओतेक कालमे ओहि टाकाक प्रति मोह आ घृणा दुनू भरि गेल छलैक। मोहक कारणे दुख आ घृणाक कारणे सुख, मने रुपैया हेरयने दुख आ सुख, दुनू संगहि-संग बूझि पड़लैक।

कमली कहलकैक—चल तँ, आगू जा कऽ ताकिऐ।'

किन्तु उतमी जेना अन्यमनस्क जकाँ रहलि ओहि टाकाक हेरयबाक प्रति। साधारणतः बिनु श्रमक आयल टाकाक प्रति लोककेँ ओतेक ममत्व नहि रहैत छैक जतेक आवेश ओ ममत्व श्रमसँ अर्जित टाकाक प्रति होइत छैक। सैह छलैक उतमीकेँ। कमली जखन बड़ जोर देलकैक तँ उतमी कनेक काल चुप रहि कहलकैक—आब की ओ भेटतौ? लऽ लेने होयतौ की।'

उतमीक मोनक एक कोनमे निराशा जागि गेलैक आ दोसर कोनमे आश्वासन। बूझि पड़लैक जेना ओकरा माथ पर बौसलि मनझनिआ मसोमात बाटमे खसि कऽ मरि गेलैक। आब ओ उतमी अछि। सधवा उतमी अछि। ओकर सोनमाक बाप सुरक्षित छैक आ ओकरा हाथक बोनमे अहिबातक फल-फूल लुबुधल छैक।

छोटसँ छोटो अनीतिक छाया पड़ला उत्तर निर्मलो मनुष्यक चरित्र मलिन भऽ जाइत छैक आ तेँ मोनमे भारक अनुभव होइत छैक किन्तु ओहि छायाक हटिते एकटा आश्वासनक बोध होइत छैक। ताही आश्वासनक अनुभूति जेना उतमीकेँ भेलैक। ओ पहिने जकाँ मन्हुआइलि नहि रहि कऽ हेंजक सभसँ आगाँ भऽ कऽ चलऽ लागलि।

भितरिया धधरा

एक···दू···तीन···चारि··पाँच··· ।

बहुत रास दीप जरि उठल । साँझ भेल आ दीपक पौघ धारी सभ अन्हारकेँ फोड़ि कऽ बाहर आबि गेल । ओकर सभक पनारि सभ धूआँ उगीलि रहल छल । दीपक धारी लगैत छल जेना कारी पाथरक पहाड़मे अजस्र रतन जड़ि देल गेल हो । बूझि पड़ैत छल जेना अन्धकारक कारी चनबामे लटकल अनगिनित तरेगनसँ स्पर्द्धा कऽ रहल हो आ अनवरत धूआँ उगोलि कऽ ओकर इजोतकेँ धूमिल कऽ देमऽ चाहैत हो, झाँपि देमऽ चाहैत हो···।

हुक्का—लोलो··हुक्का—लोली··लोली··लोली···।

जेना अन्हर-बिहाड़िक एकटा झोंक आबि गेल हो। बिरड़ो चारूकात नोचऽ लागल हो । जेना ठनका ठनकल आ बिजुरी चमकि उठल हो । छौंड़ा सभ चिचिया रहल छल । चिकड़ि-चिकड़ि कऽ जेना जीवनक समस्त चीत्कारकेँ बसातमे घोरि देमऽ चाहैत हो ।

सभक हाथमे आगिक जरैत गोला सभ छलैक। बाँसक सुपतीक बनल हुक्का-लोली धह-धह कऽ जरि रहल छलैक आ हाथक इसारा पर चारूकात चक्कर मारि रहल छलैक। घिरनी जकाँ नचैत ओ आगिक गोला सभ बूझि पड़ैत छलैक जेना शून्यमे अनेको नक्षत्र अदृश्य सूर्यक चारूकात घूमि रहल हो।

मुचकुनमा ठाढ़ भेल देखैत रहल। सड़कपर, खेतमे, इनारक लहरापर, मन्दिरक पछुआड़मे, बढ़मथानक अङनैमे, पापरतर··· सभ ठाम छौंड़ा सभ उक्का-बाती लेने सोहरल छल। ओ सभ चिचिया रहल छल, नाचि रहल छल, हरखेँ थपड़ी पाड़ि रहल छल। किछु दूर पर किछु कुकुर ओकरा सभ दिस मुँह कऽ कऽ भूकैत छलैक।

एक कातमे ठाढ़ भेल मुचकुनमाक मोनकेँ दर्द जेना चाँछि रहल छलैक। ओकरा जेना अधिकारे ने छलैक जे ओहि छौंड़ा सभक संग नाचि सकय, गाबि सकय, चिचिया सकय—हुक्का···लोली ···लोली···लोली····।

वस्तुतः ओकरा लगमे एहि खुसोमे मिज्झड़ होयबाक कोनो साधन नहि छलैक। साल भरिक पाबनि। लोक बाट तकैत रहैत अछि। एक दिनक उत्सवक लेल कतोक दिन पहिनहिसँ लोक इन्तजाममे फिरीसान रहैत अछि। से एहि लेल जे ओहि एक दिनुक आनन्दसँ जीवनमे एकटा नऽव रस आबि जाइत छैक। से एहि हुक्का-लोलीक लेल सेहो मासदिन पहिनहिसँ तैयारी करऽ पड़ैत छैक।

छौंड़ा सभ सुपती गाँथि-गाँथि कऽ रखने जाइत अछि। प्रति-योगिता रहैत छैक जे के कतेक कड़चीमे गसि कऽ सुपती गँथलक अछि। जे सभसँ बेसी गँथने रहैत अछि से अपनाकेँ विजयी जकाँ अनुभव करैत अछि।

मुचकुनमो गेल छल बड़का गिरहथक बाड़ामे सुपती गाँथऽ। बाँसक कोपड़सँ सुपती छोड़यबामे डर भेलैक—मालिक तमसाइत छथिन जे बाँसमे चुट्टी लागि जायत।' ओ नीचाँमे खसल सुपती सब बीछऽ लागल छल।

किछुए तँ बीछि कऽ गँथने छल की तीन-चारि चमेटा अनचोकेमे आबि कऽ बड़का गिरहथ मारने छलथिन। सौंसे देह झनझना कऽ सुन्न भऽ गेल छलैक। चाट लगलासँ गालपर पाँचो आङुर उखड़ि गेल छलैक...। ई बात मोन पड़िते ओकर हाथ गालपर चल गेलैक। ओ गाल हँसोथऽ लागल। चोट एखनो ओहिना नऽवे लगैत बूझि पड़लैक...।

फेर दोसर बेर ओ कतहु कोनो दोसर बँसबिट्टीमे सुपती गाँथऽ नहि गेल। ओकर आहत अभिमान आ निहत साहस दुनू जेना ओकरा रोकि देलकैक।

गाछीमे खसल कटहरक पीयर पात गाँथि कऽ उक्का बनौने छल मुदा एखन ओ जरिते ने छलैक। आन छौंड़ा सभ हँसऽ लागल छलैक—वाह रे वाह! कटहरक पातक हुक्का-लोली !! सुपती ने जुड़लै !!!

भितरिंया धधरा



मुचकुनमाक मोन तामससँ भरि गेलैक आ किछुए काल पहिने ओकरा नोचि-नाँचि कऽ फेकि देने छल। आब चुपचाप एककात मे ठढ़ भऽ आन नजरिक कैमरासँ सभ चित्र उतारि रहल छल मने। ओकरा डाँड़मे एकटा भगवामात्र छलैक। उघाड़े देहे छल तेँ कखनो काल सिहरि उठैत छल।

···छुर्र्··· छुर्र्··· छुर्र्··· छुराक्····।

छुरछुरीक तँ पथार लागि गेलैक। एहन सन जेना ओकरा सभकेँ मिरगी लागि गेल होइक। मुचकुनमा ओहि दिस तकलक। ओकर आँखिमे जेना किछु पैसि कऽ पसरि गेलैक। ओ आकाश दिस तकलक। ऊपर दिस एकटा तारा बड़ जोरसँ चलल जाइत छलैक। फेर दोसर दिस ओकर ध्यान जा कऽ अँटकि गेलैक। किछु छौंड़ा हाथमे फुलझड़ी लऽ कऽ नचा रहल छल चमकदार इजोत देखि-देखि कऽ चिचिया रहल छल—अयहय! देखनवाला देख तमासा!! देख ममासा!! अरे हे! देख रे बाबू देख रे!!

मुचकुनमा ओम्हरे दौड़ल। अच्छा! हाथो ने जरैत छै! आ नीक केहन छै!!

मुचकुनमाक मोन ओही संग नाचऽ लगलैक। ओ उत्सुकतासँ फुलझड़ी दिस देखऽ लागल—देखैत-देखैत जेना आकांक्षा जागि गेलैक—एक रत्ती हाथमे दैत! बस, एके रत्ती!' मुदा छने भरिमे ओकर मोन यथार्थक धरातल पर चल अयलैक—ऊंहुँ···ओ तँ बडका गिरहथक पढ़ुआ मालिकक बेटा छियै, मारबे करत। बड़ चण्ठ सभ छै। नै·······' ओ अपनेसँ नकारात्मक माथ डोला लेलक।

फुलझड़ी जरा-जरा कऽ छौंड़ा सभ तार फेकि दैत छलैक। मुचकुनमा दौड़ि कऽ ओकरा उठा लैत छल। जरि कऽ खसल सुपतीक धधरामे जा कऽ लेसऽ लगैत छल। ओ जरल फुलझड़ीक तार छलैक जे गरम भऽ जाइत छलैक मुदा जरैत नहि छलैक। तथापि तार सबकेँ जमा कयने जाइत छल। जमा करैत-करैत भरि मुट्ठी तार भऽ गेलैक। ओहिसँ जेना ओकर फुलझड़ीक आकांक्षाकेँ सन्तुष्टि-भेटि रहल छलैक। किन्तु धैर्यो एकटा सीमे धरि रहैत छैक।

अविराम गतिसँ एकक बाद दोसर फुलझड़ीकेँ देखैत-देखैत ओ अधीर भऽ उठल। मुदा देहमे डऽर समायल छलैक तेँ मङबाक साहस नहि होइत छलैक। ओ फुलझड़ीकेँ, ओकर चमकिकेँ, इजोतक फोहाराकेँ, झड़ैत अनगिनित तरेगनकेँ आँखिमे समेटि लेमऽ चाहैत छल। आँखिबाटेँ पीबि जाय चाहैत छल।

ओकर अन्तरक कामना एकाएक बेसम्हार भऽ उठलैक। ओ अन्ततः माङिए बैसलैक—मालिक! कने हमरो देब... ?'

—फुलझड़ी लेबेँ रे? अच्छा, थम्ह, दैत छियौ।' एकटा छौंड़ा हँसि कऽ कहलकैक। अपन बेशकीमती पैंटक जेबीसँ पाकेट बाहर कऽ नऽव फुलझड़ी लेसऽ लागल। मुचकुनमा आशावान भऽ उठल। मुदा ओहि पैंटवाला छौंड़ाक ठोरपर सिहकल मुसकानकेँ ओ नहि बूझि सकल। मुचकुनमाकेँ भेलैक जे आब हमरे हाथमे फुलझड़ी आयल, आब आयल। ओकर मोन उजबुजा गेलैल। बूझि पड़लैक जेना पढ़ुआ गिरहथक ओ बेटा सभ बड्ड नीक लोक छै, बड्ड नीक लोक। एहन सन जेना भगवाने होइक।

भितरिया धधरा

ओहि छौंड़ाक एक हाथमे फुलझड़ी जरऽ लागल छलैक। पहिलका खतम भऽ रहल छलैक। ओ बाजल—ला रे! मुचकुनमा हाथ ला …।'

मुचकुनमा हलसि कऽ अपन दहिना हाथ आगाँ बढ़ा देलक। ओकर पसरल तरहत्थीमे गुदगुदी लागि रहल छलैक। बाम हाथें दहिना हाथक तरहत्थी कुड़िअयबाक इच्छा भेलैक मुदा से नहि कयलक। बाम मुट्ठीमे औखन तार भरल छलैक। ओ अपन तरहत्थी पसारनहि रहल। पढ़ुआ मालिकक सौखीन बेटा मिझायल मुदा गरमागरम लाल तार ओकर तरहत्थीपर राखि देलकैक …. ….

—इस्स !! बापरे !!!' मुचकुनमा जल्दीसँ हाथ खीचि लेलक। छौंड़ा सभ खिलखिला उठल। मुचकुनमाक सौंसे देह झनझना उठलैक। ओ हाथ झाड़त कहरऽ लागल मुदा जीहकेँ दाँत तरमे कसि कऽ दबने छल। दाँत तरमे दबल जीह वेदनाक स्वर बाहर करऽमे असमर्थ छलैक।

आ छौंड़ा सभक खिलखिलाहटि दूरसँ टकरा कऽ ओकरा कानक पर्दाकेँ चालनि बनौने जाइत छलैक। फुलझड़ीक इजोतक दाग ओकरा दृष्टिपर पसरि गेल छलैक…दाग…दाग…दाग, बस खाली दाग…।

ओ घर दिस घूमि गेल। वेदना आ आहिसँ मोन भरल। हाथक टीससँ ओकरा मस्तिष्कपर जेना बहुते रास चीज सभ पड़ल जाइत छलैक।

अकस्मात् ओकरा कपारपर अनेको रेखा बनि गेलैक। दांतपर दांत कसि कऽ बैसि गेलैक। सौंसे देह टाँट भऽ गेलैक। दुनू हाथ दुनू दिस तनि गेलैक। दुनू हाथक मुट्ठी कसि कऽ बन्हा गेलैक। निचला ठोरकें ओ दांतसँ कसि कऽ काटि लेलक। जखन दहिना हाथक पकलाहा तरहत्थी दर्द करऽ लगलैक तँ अनायासे ओकर मुट्ठी ढोल भऽ गेलैक। पढ़ुआ मालिकक मने बड़का गिरहथक दलानक आगाँ दऽ मुचकुनमा-घर दिस बाट जाइत छलैक। ओ ओहि दलान लग आबि कऽ ठमकि गेल। ओकर मुट्ठी फेर बन्हा गेलैक। दलानपर कयौ छलैक नहि। सुन्न छलैक। मुदा दीपक धारीसँ सौंसे दलान जगमग करैत छलैक। दीपक पैंघ-पैंघ टेम डोलि रहल छलैक जेना ऐश्वर्यसँ उन्मत्त भऽ गेल हो। दलानवलाक दर्पकें अभिव्यक्ति दैत हो।

मुचकुनमा एकबेर एमहर-ओमहर तकलक आ दलान दिस बढ़ि गेल। फेर पलभरि रुकल आ पुनः औसारा पर चढ़ि गेल। एके फूकमे एक दीपकें मिझा देलकैक... दोसर मिझा देलकैक... फेर चौकन्न भऽकऽ चारू दिस तकलक। कयौ कतहु नहि देखि पड़लैक। बहुत दूरपर पढ़ुआ मालिकक धिया-पुताक चिकरब ओहिना चलि रहल छलैक। छौंड़ा सभ ओहिना हुक्कालोला करऽमे मगन छल। मुचकुनमा हाजि-हाजि कऽ औरो बहुत रास दीपकें मिझा देलकैक। मोनक पीड़ा बहुत किछु शान्त भेल जा रहल छलैक। कारण, प्रतिशोधक भावना मनुष्य मात्रक प्रकृति थिकैक।

भितरिया धधरा

अपन सामर्थ्यक अनुपातमे प्रतिशोध लऽ कऽ लोकक आहत अहं सन्तुष्ट भऽ जाइत छैक। मुचकुनमा सेहो दीपकें मिझा कऽ गोह प्रतिशोध लऽ रहल छल।

सौंसे दलान अनहार जकाँ भऽ गेलैक। दू-तीन मिनट पहिने ओकर जे इस्इस्सी छलैक ओ समाप्त भऽ गेल छलैक। मुचकुनमा लगले-लागल बहुतो दीपकेँ फूकि फूकि कऽ मिझौने छल तेँ हकमऽ लागल छल। आकरा मुँह आ नाकसँ साँसक गरम गरम बसात बहराइत छलैक। हकमिते-हकमिते मुचकुनमा कूदि कऽ दौड़ि कऽ सड़कपर चल आयल।

कुदने आ दौड़ने ओकर हकमो बढ़ि गेलैक। मुदा खूब तेजीसँ चलैत ओहि गरम साँसमे सन्तोखक मात्रा बड़ बेसी छलैक। ओकरा हाथमे आब दर्द नहि बूझि पड़ैत छलैक। उत्ताप कम भऽ गेल छलैक। ओ विजयी जकाँ चौबट्टीपर खेलमे मगन छौंड़ा सभ-दिस तकलक। दलानमे पसरल मनहूस अन्हारकेँ देखलक। मुदा ओकरा भीतरमे धह-धह करैत जे एकटा धधरा छलैक तकरा ओहो आँखिजे नहि देखि सकल। जं देखि लैत तं क्रान्तिकारी भऽ जाइत। किएक तँ बाल्यकालमे पजरल भितरिया धधरा भविष्यक भीषण क्रान्तिकारीक निर्माण करैत छैक। ओ आगाँ बढ़ि गेल।

पहुना

आब ओ धतिङ सन गाछी नहि, कोला-कोलीमे हिस्सा बाँटल छोट-छोट खेत रहि गेल छलैक सभ भाइ अपन-अपन बाल-बच्चा लऽ कऽ फराक भऽ गेल छलाह। सभ एक-दोसराक लेल बिरान। तेँ एकसरे अपना हिस्साक कोलामे गहूम कटबैत छलहुँ।

एक गोट सात-आठ बरखक छौंड़ो टूड़ा बीछि-बिछि जमा करैत छलि। हम ओकरा मना कयलिऐक। मुदा के मानैत अछि! कय बेर ने कहलिऐक किन्तु ओ एकोरत्ती कान-बात नहि देलक! हमरा दिस ताकि कने थाम्ह जाय आ जेँ की हमर ध्यान दोसर दिस जाय की ओ फेर अपन काजमे लागि जाय।

बेर-बेर ई होइत देखि कऽ एकटा मौगी दोसर मौगी केँ कहलकैक—हय बसन्ती, बेटीक अगरजितपन देखौ छह? सज्जन गिरहथक संग एना नहि ने करो! ओ तँ अपने आँटी-मुट्ठी दऽ दै छथिन।'

बसन्ती नाम सुनैत देरी जेना पूर्व स्मृति जागि गेल। मोनमे एकटा भडछल चित्र आबि गेल। यैह थीक ओ धरतो जाहिमे कहियो अग्गहसँ बिग्गह गाछी छलैक। अजोद्ध-अजोद्‌ध आमक गाछ। रंग बिरंगक आम। कटहर, मोहु, बेल, जामुन, कदम्ब, सीसो आ गम्हाड़िक गाछ सभ। ओकर ओगरबाही किछु बरख हमहूँ दुनू भाइ कयने रही। से जतबा बरख भार रहल ताहिमे सालो भरि एक तरहेँ गाछियेमे बिताबऽ पड़य। मज्जरसँ लऽ कऽ आंठी धरि अ म-कटहरक ओगरबाहि, कातिक-अगहन धरि रखांत घास ओ डाभीक ओगरबाहि आ फागुन धरि पसारल पोआरक ताक-छेम। तेँ गाछीक पात-पातसँ अपनैती भऽ गेल छल।

गाछीक एहि कोनसँ ओहि कोन धरि एक पेड़िया छलैक जे बजार आ लग-पासक गामकेँ लगीच बनौने रहैत छलैक, बाट बड़ चलनसारि। आ सभ नियमित बटोहीक चेहरा चिन्हार छल। चैत-वैसाखक कड़गर रौदमे बटोही कने छाहरिमे विश्राम कयलक आ फेर विदा भऽ गेल। एही बटोही समूहमे एकटा छल ओ दूधवाली छौंड़ी।

ठीकाठीक दुपहरियामे कयदिन ओ बड़ो-बड़ी काल धरि आगांमे अपन छिट्टामे खाली चपै टुकड़ा झपनेसँ रखने रहैत छलि आ आँचरसँ हौंकैत सुस्ताइत छलि।

कोनो मास रहओ, ओ अबैत छलि अवस्से। बारह-तेरह

बरखक बयस रहल होयतैक। प्रति दिन दूध लऽ कऽ अबैत छलि। माथ पर छिट्टाक अनठेका मारने, हाथमे लोटाक फनकी धयने—ई आकृति जेना चिर परिचित भऽ गेल छल। जखन ओकरा छिट्टा रखबाक मोन होइत छलैक तँ सोर पाड़ि कऽ बड़ अनुनयसँ राखि देमऽ कहैत छलि।

हमरा ई नहि मोन छल जे ओकरा कहिया सभसँ पहिल बेर देखलिऐक, ने यैह मोन छल जे ओकर बसन्ती नाम कहिया बुझलिऐक। अनायासे ओकरासँ आत्मीयता जकाँ भऽ गेल छल।

अस्पताल दूध पहुँचाबऽ ओ नित्य जाइत छलि। ओमहरसँ घूमैत थोड़ेक काल गाछीमे बौसबे करैत छलि। कहियो जँ टिकुला बेसी रहल तँ खुरचनसँ सोहि दैत छलि। बरिसातक मासमे भीजैत-तीतैत आबि हमरे खोपड़ो तरमे बैसि बुनछेक होयबाक बाट तकैत छलि। बुनछेक होयबामे देरी होइत छलैक तँ बारह-मासा उठबैत छलि—

साओन हे सखि सबद सोहाओन कन्त मोर परदेस यो

बातावरण एके बेर झंकृत भऽ उठैत छल। अन्तिम टुकड़ी—कन्तके हम ताकि आनब धरब जोगिन भेस यो—गबैत-गबैत ओकर आँखि बन्द भऽ जाइत छलैक—जेना विभोर भऽ गेलि हो।

हम कचकचयबाक लेल टोकि दैत छलिऐक—गय, जोगिन भऽ जेबही तँ दूध के पहुँचौतौ ?'

एहि पर बसन्तो तमसा कऽ उत्तर दैत छलि—हो, एतबा ने बुझै छहऽ जे ई गीत छिअइ गीत।'

एकदिन बिहड़िया आम सोहैत-सोहैत कहने रहय जे ओकर बाप मलेरियासँ मरि गेलैक जलपाइगोड़ीमे। दुइए माय-बेटी दूधक पैकारीसँ गुजर करैत छलि। अपन एकटा गाइयो छलैक।

एक बेर ओ तीन-चारि दिन नहि आइलि। ई अप्रत्याशित घटना छल। हमरा दुनू भाजिक मोनमे जेना कोनो उचाट लागि गेल। मोनमे खुटखुट्टो पैसि गेल। ओही दिन अनुभव भेल जे बसन्तीसँ हमरा सभकेँ आत्मीयता जकाँ भऽ गेल अछि। नित्यक सम्पर्कसँ जखन गाछो-वृक्षसँ आत्मीय स्नेह भऽ जाइत छैक तखन तँ बसन्ती मनुष्य छलि, समवयस्क छलि।

चारिम दिन ओ आइलि तँ मोन एकदम पुलकित छलैक जेना आसिनक भोरक भकरार भेल उज्जर मलकोका हो। सरिसवक फूलसन पीयर साड़ी पहिरने मुसकी मारैत चल अबैत छलि। दाँत बूझि पड़ैत छलैक जेना बिहाड़िसँ फूटल आमक फाटसँ झलकैत गुद्दा ओ कोइली होइक। ने तँ सद्यः कनेक चनकल बाङक ढेढ़ी होइक।

हम मचान परसँ उतरैत पुछलिऐक—गय! कतऽ छलेँ एते दिन?'

—कने हमरा माय परसँ उतारि दयह तखन कहै छियऽ ने।'

बसन्ती ई कहि हमरा दिस तकलक। ओकरा आँखिमे काजरक मद्धिम रेह छलैक। बूझि पड़ल जेना कोनो अव्यक्त आनन्द आँखि बाटेँ छिलकि जयतैक।

हम ओकरा माथ परसँ पथिया उतारि देलिऐक तखन ओ कहऽ लागलि—हौ, ओइ साँझमे हमर पहुना आयल छलै तँ हम कोनो अबितिऐ? आइये भोरमे तँ गेलै! तैँह हमरालय ई साड़ी लेने आयल छलै। बहुते दिन पर आयल छलै से बड़की गो लगै छलै।'

हमरा भाइकेँ जेना एकटा लुत्ती परि लागि गेलैक। ओ बाजल—ओ!! तोरा पहुनो छउ गय! बड़ मानै छौ तोरा!'

बसन्ती लजबिज्जी जकाँ लजा गेलि। ओकर मुख आरक्त भऽ उठलैक। हमर भाइ फेर कहलकैक—गय की नाम छियौ तोरा पहुनाक? ''बाज ने गय ''।

ओ कनेक काल ठमकलि रहलि फेर हमरा परचारैत कहलक—देखहक हौ! पहुनोक कतउ लोक नांव लेलकैए?'

हम बात टारैत कहलिऐक—अच्छा, कह तँ तोहर पहुना केहन छौ?'

—हौ, तोरे एते गो छ। एनमेन तोरे सन सीखलीख। बाबड़ी मुदा कोनादन कऽ सीटै छै!'

आगाँ और किछु कहैत मुदा बूझि पड़लैक जेना आ कोनो अनर्गल कथा बाजि रहल अछि आतेँ चुप्प भऽ गेलि।

कनेक काल चुप्पी रहल तकरा बाद ओ पुनः कहऽ लागलि—कहै छलौ जे विदागरो करा कऽ लऽ जेबौ। हौ, तखन तँ मायोसँ ने भेंट होयत। तोरो सभ सँ भेंट नहि होयत। हम तँ कहि देलियै जे हम ककरो बहिकिरनी नै छिऐ जे पकड़ि कऽ लऽ जायत। हम नहि जयबे। मुदा माय जाइ कालमे कहि देलकै जे मेहमानक लोक छियनि जखन खाहिस हेतनि तखन लऽ जयताह।'

बसन्तीक आँखि डबडबा जकाँ गेलैक। ओ माटि खोधैत बाजलि—तोँ सभ हमरा ओतऽ अयबह ? हम ओहि ठामक लोक कें ओतऽ कहबौ जे हमर भाइ छी।'

हम प्रसंग बदलबाक लेल कहलिऐक—हमरासभ लेल सनेस तँ अनबे ने कयलें, तखन हम तोहर भैया केहन हेबौ ?'

—आरो तोरी ! पहुना हमरा चुपेचाप दूटा रुपैया आ एक पतौड़ा मिसरीक ढेप देलकै। यैह देखहक ने, तोरो सभ लय लेने अयलियह अछि।' ई कहि कऽ ओ चपइ तर सँ पतौड़ा बहार कऽ हमरा हाथमे धऽ देलक।

एहिना क्रम चलि रहल छलैक। ओहिमे कहियो कोनो व्यतिक्रम नहि भेलैक। मुदा फेर एक बेर आ तोन-चारि दिन नहि आइलि। आ जखन आइलि तँ ओकर आँखि करजनी जकाँ लाल-टेस भऽ गेल छलैक। आँखिक पऽल घुघुसि गेल छलैक। बूझि पड़ल जेना ओ खूब कानल हो।

ओ ओहि दिन बिनु पुछनहि कहलक—हमर माय दोसर गोटेक सङ समन्ध कऽ लेलकै। परसूए सगाइ भेलैए।' ओकर गऽर बाझि गेल छलैक आ ई बात कहैत-कहैत ओकर कोंढ़ फाटऽ लगलैक। ओ हिचुकि-हिचुकि कानऽ लागलि।

हमरा नहि बूझि पड़ैत छल जे कोना ओकरा बोल-भरोस दिऐक। हम पुछलिऐक—आब तँ तों एकसरिए छें, कोना रहबें?'

ओ खऽड़ खोंटैत उतारा देलक—ईह, हमर पहुना एतै आ हमरा लऽ जेतै। ओ जे घड़ी ने एलैए। हमर मालति माय हमरा छोड़ि देलक तँ की हमर पहुनो हमरा छोड़ि देत?'

तकरा बाद ओ फेर नहि आइलि। नहिओ आइलि......

आ एक युग पर बसन्ती नाम सूनि कऽ जेना सभ बात नऽव भऽ गेल। एकदम नऽव। हम उत्सुकतासँ ओहि छौंड़ी दिस देखऽ लगलिऐक। पहिलकी मौगी फेर बाजलि—औ! गिरहत!! की तकै छी? बच्चा छै, अपराध भऽ गेलै।'

हम कहलिऐक—हय, तोरा गाममे एकटा तँ आरो बसन्ती छलह जकर माय सगाइ कऽ लेने छलै? ओकरा जनै छहक?'

—हँ गौह तँ अछि अभगली। ओकरे बेटी छिऐ ई छौंड़ी।' ई कहि एकगोट स्त्री दिस देखा देलक। ओकरा सोर पाड़ैत बाजलि—बसन्ती हय, तोरा तँ मालिक चिन्है छथुन हय!'

पहुना

बसन्ती हमरा दिस तकैत ठाढ़ि भऽ गेलि। हाँसू लऽ कऽ अपन नऽह खोंटैत बाजलि—हमर नाँ अहाँके मोने अछि? हम तँ अहाँके देखिते चीन्हि गेली।'

ओ कनेक हँसि देलक किन्तु ओहि हँसीमे हमरा अजस्र पीड़ाक अनुभव भेल। बूझि पड़ल जेना पुंजीभूत विषाद रूप बदलि कऽ व्यक्त भेल हो।

हम देखलिऐक सिउँथिमे सिकियोसँ पातर सिन्दूरक रेखा; पता नहि कखन मेटा जाइक। दुनू हाथमे एक-एकटा लहठी। जेना औन्हा अल्हुआ अपने भाफसँ सीझि जाइत छैक तहिना ओकर यौवन अपने आगिमे झरकि गेल छलैक।

किछु कहबाक इच्छा भेल मुदा 'गय' कहि कऽ सम्बोधन करैत अपने संकोच भेल। हम ओहिना पूछि बैसलिऐक—हय, पहुनाक कुसल कहह। निकें छह ने?'

—हँ, जतऽ रहय, भगवान खुसी रखथुन।'

—से किएक?'

—गिरहत! ओ तँ एगो दोसर मौगीसँ सगाइ कऽ लेलकै। एखन जलपाइगोड़ीमे छै। कहि ने, हम की अपराध केलियै!' ओ निसास छोड़ैत बाजलि।

—तँ तोंहूँ सगाइ कऽ ने लयह?' हम कहलिऐक।

—हमहूँ सब तँ कहैं छिऐ जे दोसर घर कऽ ले, एकटा मरदाबा

लय अरन जिनगी गोड़ने रहने कोन फऽल ?' पहिलकी मौगी समर्थनमे बाजलि—गिरहत ! एकरा हम सभ बुझबैत-बुझबैत थाकि गेली मुदा एकरा लय धन्न सन।'

बूझि पड़ल जेना बसन्तीक कानमे पीड़ा देमऽ वला गप्प पड़ि गेलैक। वेदनासँ ओ व्यथित भऽ उठलि। नारीक जीवनक सभसँ पैघ विशेषता वा विवशता यैह होइत छैक जे जकरा एक बेर सर्वात्म भावें समर्पण कऽ दैछ तकरा प्रति जीवन भरि एक-निष्ठ बनलि रहि जाइछ। ओही नारीक दर्शन हमरा ओहि बसन्तीमे भेल। हमरा अपने कथन पर क्षोभ आ पश्चात्ताप होमऽ लागल। वस्तुतः श्रोताक मनोभावक ध्यान विना रखनहि जे कयो कोनो कथा बाजि जाइत अछि तकरा एहने मनस्ताप भोगऽ पड़ैत छैक।

हम अपराध-स्वीकृतिक स्वरमे पुछलिऐक—अनजानेमे हम एहन कथा तोरा कहि देलियह। तोरा मोनमे हमरा बातक कचोट भेलह ?

—दुखक बात नै गिरहथ! ओकर चेन्ह जे ओ छौंड़ी छै तकरा को करबौ ? ओकर राइ-दोहाइ के हेतै ?' ओ पूर्वहि जकाँ हाँसूपर नऽह खोंटैत बाजलि—आ दोसर बात, हमर जे पहुना छल से की अइ जिनगीमे फेरो भेटत ? जखन नहिंये भेटत तखन सगाइ की ? हाथ तँ एकै बेर धरै छै ! किछु होउ, बिअहुआ तँ अछि हमरे, से तँ अनकर नहि भऽ सकै छै ! भने घरवला अनकर

पहुना

भऽ जाउ मुदा पहुना तँ अनकर नै भऽ सकतै !' फेर हमरा मोन पाड़ैत कहलक—गिरहत ! अहाँके मोन नहि अछि जे हमर माय समन्ध कऽ लेलक तँ हमर कोन दशा भेल छल ? '

ओ शून्य दृष्टिजे क्षितिज दिस देखऽ लागलि । ओकर आँखिक कोर जेना भीजि गेल छलैक । हम मूढ़ जकाँ देखैत रहलहुँ ।